**LATEST EDITON**

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# राजस्थान हाईकोर्ट

# LDC

## लिपिक ग्रेड - II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक

**HANDWRITTEN NOTES**

### भाग - 2 राजस्थान भूगोल + इतिहास+ संस्कृति + करंट अफेयर्स

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# राजस्थान हाईकोर्ट

# L D C

## लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक

### भाग – 2

**राजस्थान भूगोल +इतिहास + संस्कृति +करंट अफेयर्स**

# प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान हाईकोर्ट** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

***अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/***

**प्रकाशक:**

**INFUSION NOTES**

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

**Whatsapp Link** – https://wa.link/2vgzg6

**Online Order Link** - https://bit.ly/high-court-ldc

| | |
|---|---|
| **मूल्य : ₹** | **संस्करण : नवीनतम** |

# राजस्थान का भूगोल


| | |
|---|---|
| 1. राज्य की स्थिति एवं विस्तार | 1 |
| 2. राज्य के भौतिक प्रदेश | 14 |
| 3. राजस्थान की नदियाँ | 26 |
| 4. राजस्थान की झीलें | 39 |
| 5. राज्य की जलवायु | 45 |
| 6. वनस्पति, वन एवं वन्य जीव | 47 |
| 7. राज्य की कृषि | 54 |
| 8. राज्य की प्रमुख सिंचाई परियोजनाएं | 61 |
| 9. पशुधन | 64 |
| 10. राजस्थान में खनिज संसाधन | 67 |
| 11. जनसंख्या वितरण, एवं जनजातियां | 75 |
| 12. राजस्थान के प्रमुख उद्योग | 92 |

# राजस्थान का इतिहास


1. राजस्थान इतिहास के स्रोत 96

2. राज्य की सभ्यताएं 111

3. गुर्जर प्रतिहार वंश 118

4. मेवाड़ का इतिहास 122

5. मेवाड़ -मारवाड़ सम्बन्ध 131

6. राठौड़ वंश एवं मारवाड़ वंश 138

7. कच्छवाहा वंश 151

8. बीकानेर के वंशज 157

9. किशनगढ़ का राठौड़ वंश एवं राजस्थान के अन्य वंश 164

10. राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां 174

11. राजस्थान में 1857 की क्रांति 178

12. राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन 183

13. प्रजामंडल आंदोलन 195

14. राजस्थान का एकीकरण 199

15. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 205

# कला संस्कृति


| | |
|---|---|
| 1. राजस्थान के लोक देवता एवं लोक देवियाँ | 218 |
| 2. राजस्थान के किले, महल एवं हवेलियाँ | 225 |
| 3. राजस्थान के प्रमुख मंदिर | 236 |
| 4. राज्य का साहित्य एवं बोलियाँ | 239 |
| 5. राज्य की चित्रकला | 247 |
| 6. राजस्थान की हस्तकला | 253 |
| 7. राजस्थान के प्रमुख मेले | 255 |
| 8. राजस्थान के प्रमुख त्यौहार | 260 |
| 9. लोकगीत एवं लोक नृत्य | 266 |
| 10. राजस्थानी पहनावा एवं आभूषण | 274 |
| 11. सामाजिक रीत रिवाज एवं प्रथाएँ | 276 |
| 12. राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय | 287 |
| 13. प्रमुख पर्यटन केंद्र | 294 |

# हाईकोर्ट LDC की परीक्षा के लिए अन्य महत्वपूर्ण अध्याय


1. राज्यपाल 300

2. मुख्यमंत्री और मंत्रीपरिषद् 307

3. राज्य विधान मण्डल 315

4. उच्च न्यायालय 324

5. करंट अफेयर्स 332

# राजस्थान का भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन

## अध्याय – 1

## राज्य की स्थिति एवं विस्तार

### राजस्थान का विस्तार -

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30° 12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर है।

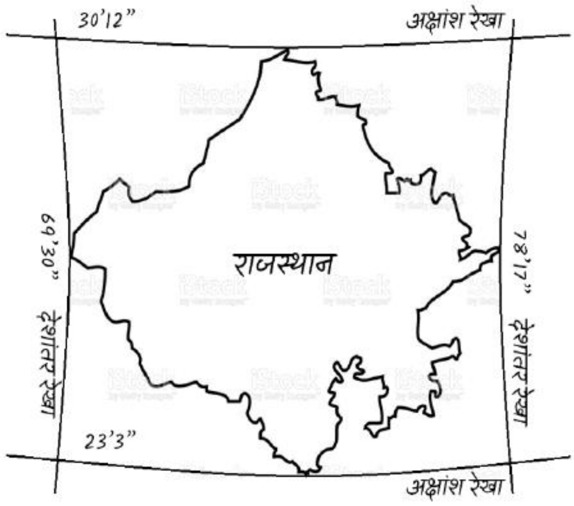


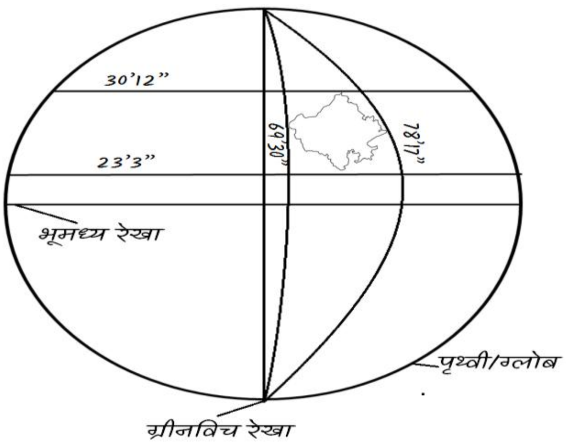


**नोट :-** राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार **7° 9"(30°12" 23°3")** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार **8°47" (78°17" 69°30")** है।

**1° = 4 मिनट**

**1° =111.4 किलोमीटर होता है।**

**अक्षांश रेखाएँ :-** वह रेखाएँ जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अथार्त भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र-1)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180° डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।

**देशांतर रेखाएँ :-** उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है। ग्रीनविच, जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है, से गुजरने वाली यामोत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते है। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180° डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

- राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।
- 1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था । लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया ।
- 2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 6,85,48,437 थी, जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।

- **कर्क रेखा राजस्थान में स्थित :-**

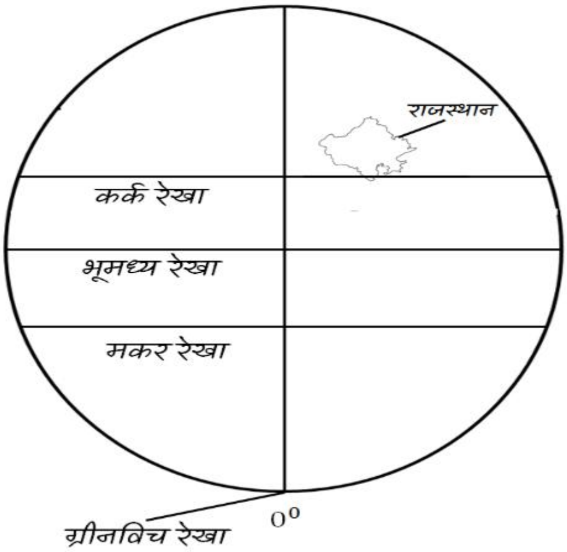


कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-

1.गुजरात 2.राजस्थान 3.मध्यप्रदेश 4.छत्तीसगढ़ 5.झारखंड 6. पश्चिम बंगाल

7.त्रिपुरा 8.मिजोरम

राजस्थान में कर्क रेखा बाँसवाड़ा जिलें के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है । इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिलें को भी स्पर्श करती है, अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है ।

राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है । राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है ।

राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है ।

भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती हैं, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है । जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है ।

राजस्थान में बाँसवाड़ा जिलें में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती हैं जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती हैं।

**कारण** :- बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है, तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है ।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बाँसवाड़ा होना चाहिए, एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए, लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है।

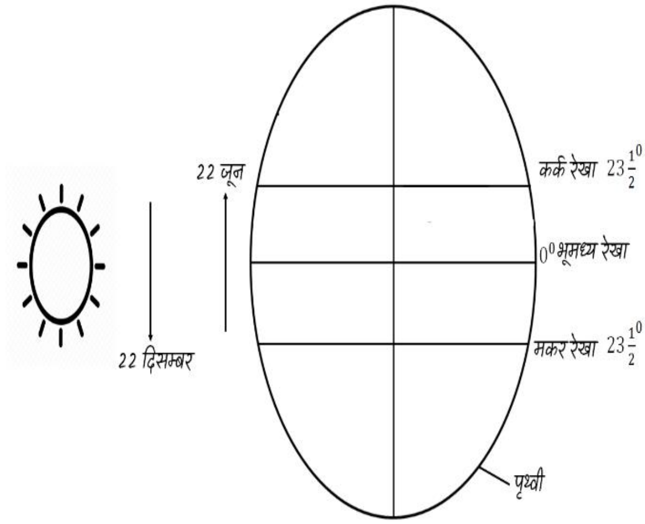


( निम्न मानचित्र को ध्यान से समझिए ) –

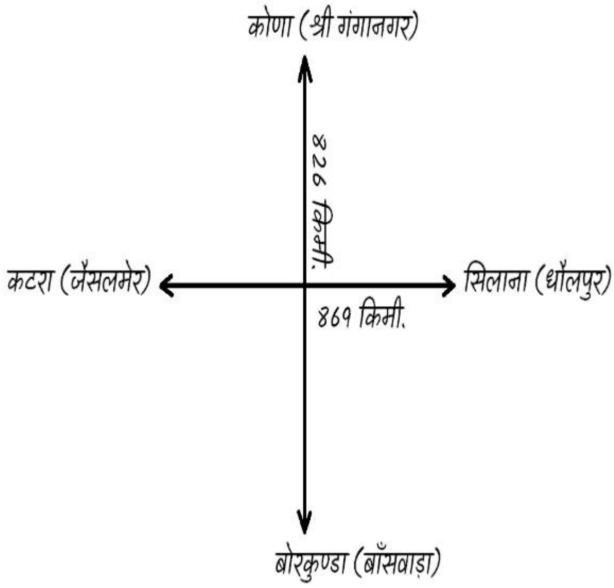


पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त

राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

**विस्तार** :-राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिलें के कोणा गांव से दक्षिण में बाँसवाड़ा जिलें की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।

**उत्तरप्रदेश (877 कि.मी.) :-**

राजस्थान के दो जिलों की सीमा उत्तरप्रदेश के दो जिलों (मथूरा व आगरा) से लगती है। उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा भरतपुर व न्यूनतम धौलपुर की लगती है। उत्तरप्रदेश की सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय भरतपुर व दूर जिला मुख्यालय धौलपुर है। उत्तरप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भरतपुर व छोटा जिला धौलपुर है।

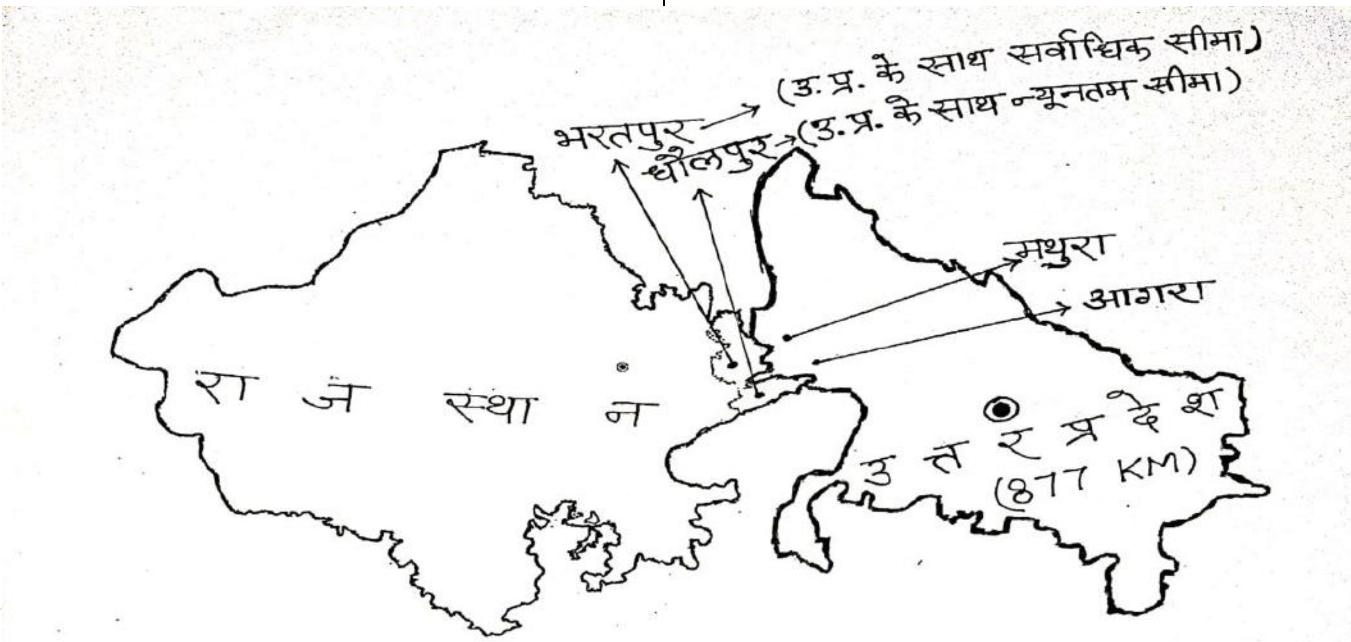


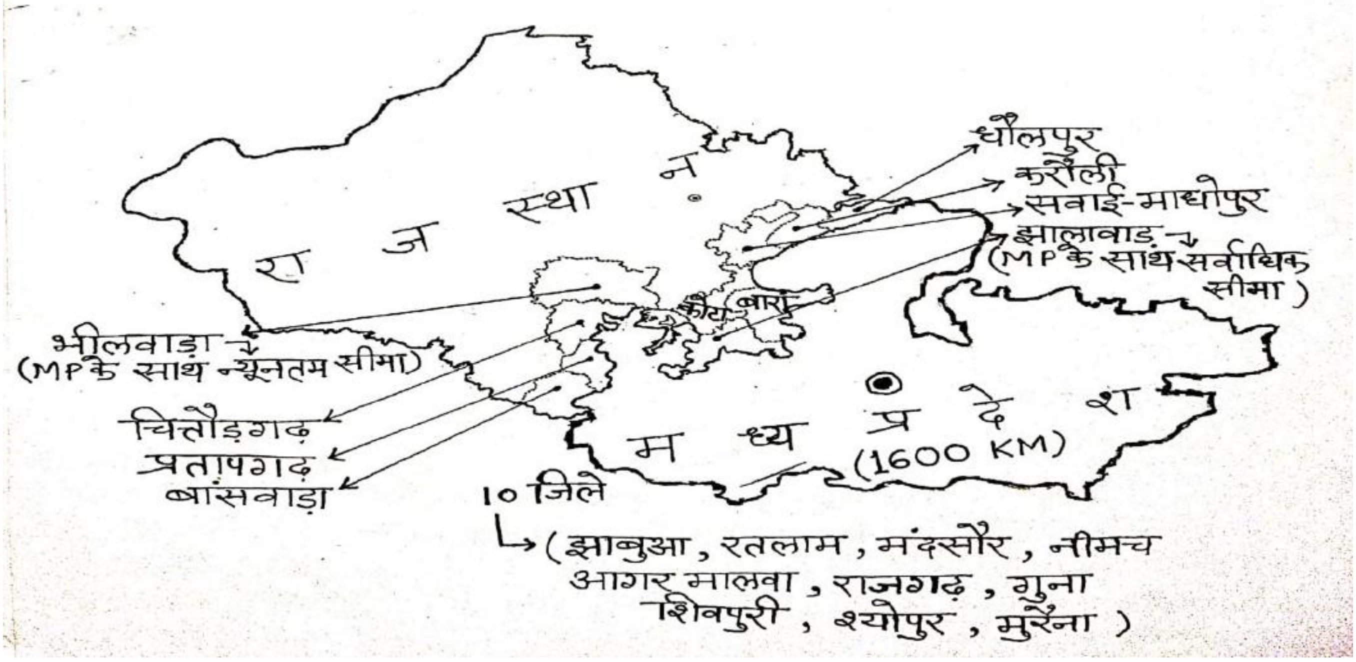


**मध्यप्रदेश (1600 कि.मी.) :-**

राजस्थान के 10 जिलों की सीमा मध्य प्रदेश के 10 जिलों की सीमा से लगती है।(झाबुआ, रतलाम, मंदसौर,निमच, अगरमालवा, राजगढ, गुना, शिवपुरी, श्योपुर, मुरैना) मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा झालावाड़ व न्यूनतम भीलवाड़ा की लगती है तथा सीमा के नजदीक मुख्यालय धौलपुर व दूर जिला मुख्यालय भीलवाड़ा है। मध्यप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भीलवाड़ा व छोटा जिला धौलपुर है।

# राजस्थान
## विभिन्न क्षेत्रों के प्राचीन नाम

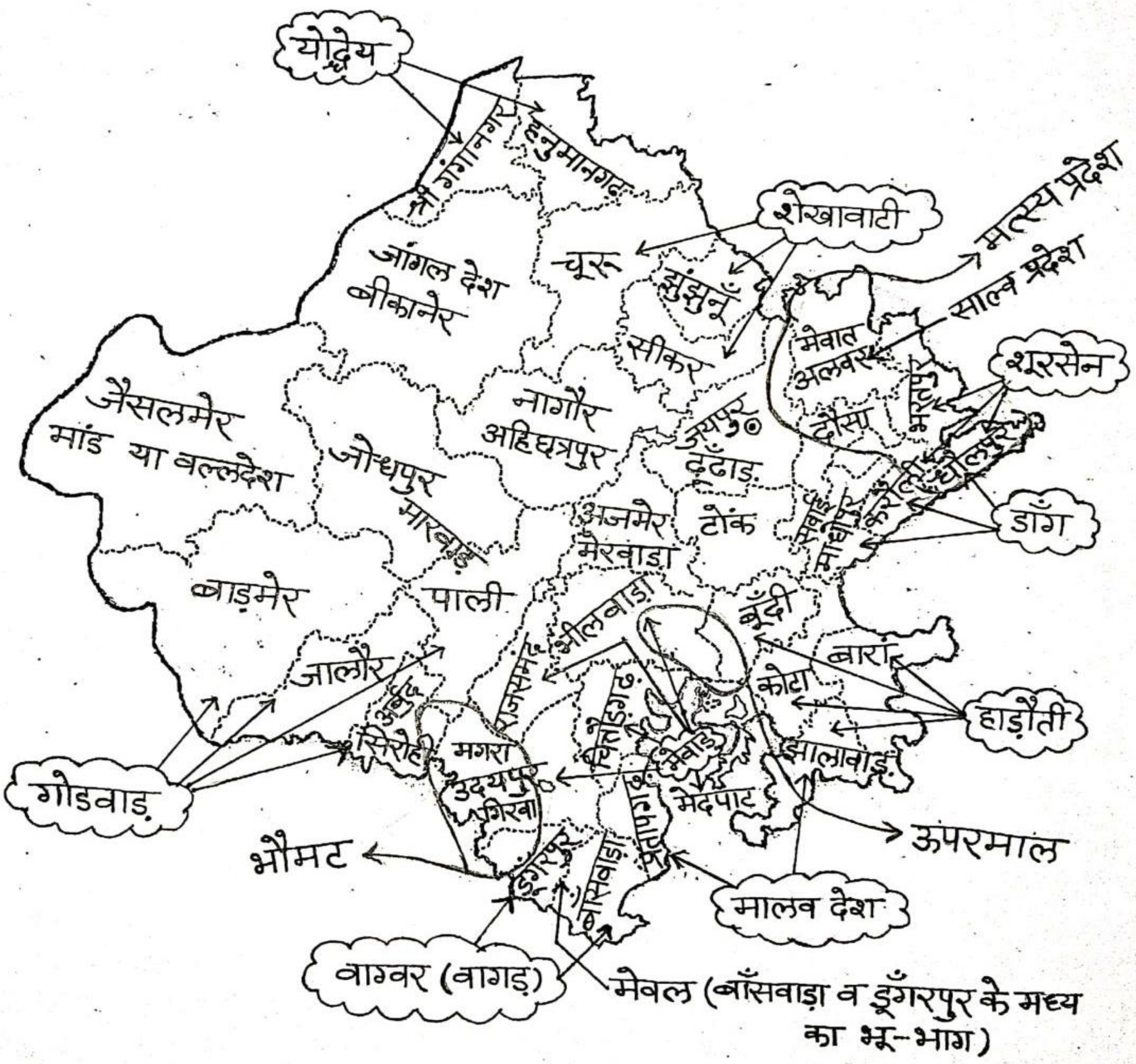


***<u>प्राचीन भौगोलिक क्षेत्रों की वर्तमान स्थिति</u>***

***जांगल देश –*** *बीकानेर और जोधपुर जिलें का उत्तरी भाग*

***यौद्धेय –*** *हनुमानगढ़ और गंगानगर के आस - पास का क्षेत्र*

***गिरवा –*** *उदयपुर में चारों ओर पहाड़ियां होने के कारण उदयपुर की आकृति एक तश्तरी नुमा बेसिन जैसी है जिसे स्थानीय भाषा में गिरवा कहते हैं।*

***गौडवाड़ –*** *दक्षिण पूर्वी बाड़मेर, पश्चिमी सिरोही, जालौर*

***अहिछत्रपुर -*** *नागौर*

**नोट** – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

**संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083**

**प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -**

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 (cut off- 64) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 30 नवम्बर | 66 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 01 दिसम्बर | 65 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 13 सितम्बर | 113 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट) | 79 (150 में से) |

| | | |
|---|---|---|
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 95 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 56 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |

## & Many More Exams

**दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –**

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

**अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।**

| | |
|---|---|
| ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE | Website- https://bit.ly/high-court-ldc |
| PHONE NUMBER | +918233195718<br>+918504091672<br>9694804063<br>01414045784, |
| TELEGRAM CHANNEL | https://t.me/infusion_notes |
| FACEBOOK PAGE | https://www.facebook.com/infusion.notes |
| WHATSAPP करें | https://wa.link/2vgzg6 |

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# अध्याय – 3

# राजस्थान की नदियाँ

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम लोग "राजस्थान का अपवाह तंत्र" के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले जानते हैं कि क्या होता है "अपवाह तंत्र"?

**अपवाह तंत्र -**

जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं तब उसे अपवाह तंत्र कहते हैं।अपवाह तंत्र में नदियां एवं उसकी सहायक नदियां शामिल होती हैं।

### (अ) बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ :

इस अपवाह तंत्र में निम्न प्रमुख नदियां शामिल होती है जैसे चंबल, बनास, काली सिंध, पार्वती, बाण गंगा, खारी, बेडच, गंभीरी आदि। ये नदियां अरावली के पूर्व में बहती हैं इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी घाट तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विंध्याचल पर्वत है यह सभी नदियां अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में ले जाती हैं।

### (ब) अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ :-

इस अपवाह तंत्र में इन निम्न प्रमुख नदियां शामिल है जैसे माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूणी, इत्यादि । पश्चिमी बनास, लूनी गुजरात के कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती हैं, ये सभी नदियां अरब सागर की ओर अपना जल लेकर जाती हैं।

### (स ) अंतः प्रवाह वाली नदियां -

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियां और अरब सागर में गिरने वाली नदियों के अलावा कुछ छोटी नदियां भी हैं जो कुछ दूरी तक प्रभाव में होकर राज्य में अपने क्षेत्र में विलुप्त हो जाती हैं तथा उनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता इसलिए इन्हें आंतरिक प्रवाह वाली नदियां कहा जाता है जैसे काकनी, कांतली, साबी घग्गर, मेंथा, बांडी, रूपनगढ़ इत्यादि ।

### राजस्थान राज्य की नदियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य जो की परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं -

- राजस्थान की अधिकांश नदियों का प्रवाह क्षेत्र अरावली पर्वत की पूर्व में है
- राजस्थान में चंबल तथा माही के अलावा अन्य कोई नदी बारह मासी नहीं है ।
- राज्य में चूरू व बीकानेर ऐसे जिलें हैं जहाँ कोई नदी नही है ।
- गंगानगर में यद्यपि पृथक से कोई नदी नहीं है लेकिन वर्षा होने पर घग्गर नदी का बाढ़ का पानी सूरतगढ़, अनूपगढ़ तक चला जाता है ।
- राज्य के 60% भू-भाग पर आंतरिक जल प्रवाह का विस्तार है।
- राज्य में सबसे अधिक सतही जल चंबल नदी में उपलब्ध है।
- राज्य में बनास नदी का जल ग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।
- राज्य में सर्वाधिक नदियां कोटा संभाग में बहती हैं
- राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।
- राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं ।
- रेगिस्तान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं ।
- मारवाड़ की जीवन रेखा लूनी नदी को कहते हैं ।
- बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं ।
- राजसमंद की जीवन रेखा नंद समंद झील कहलाती है ।
- भरतपुर की जीवन रेखा मोती झील है ।
- गुजरात की जीवन रेखा नर्मदा परियोजना है।
- जमशेदपुर की जीवन रेखा स्वर्ण रेखा नदी को कहा जाता है इस नदी पर हुंडरू जल प्रपात स्थित है ।
- आदिवासियों की या दक्षिणी राजस्थान की जीवन रेखा माही नदी को कहा जाता है
- पूरे राज्य में बहने वाली सबसे बड़ी नदी बनास है
- भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना की गई थी 1955 में इस बोर्ड का नियंत्रण राजस्थान सरकार को सौंपा गया था। 1971 से इस बोर्ड को भू-जल विभाग के नाम से जाना जाता है इसका कार्यालय जोधपुर में है ।
- राज्य के पूर्णता बहने वाली सबसे लंबी नदी का सर्वाधिक जल ग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है ।

- *चंबल नदी पर भैंसरोडगढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया जल प्रपात तथा मांगली नदी पर बूंदी में "भीमलत प्रपात" है ।*
- *सर्वाधिक जिलों में बहने वाली नदियां चंबल, बनास,लूणी है जो कि प्रत्येक नदी 6 जिलों में बहती है ।*
- *अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाली नदी एक मात्र नदी है चंबल ,जो कि राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।*
- *राजमहल (टोंक) नामक स्थान पर बनास, डाई और खारी नदी का त्रिवेणी संगम स्थित है यहां शिव एवं सूर्य की संयुक्त प्रतिमा स्थित है जो मार्तंड भैरव मंदिर या देवनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है यहां नारायण सागर बांध स्थित है।*
- *प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं । सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे –*

### I. चंबल नदी

*प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्वपूर्ण विशेषताएं -*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# चम्बल नदी एवं इसकी सहायक नदियाँ

- राजस्थान की कामधेनु
- प्राचीन नाम – चर्मण्वती
- कुल लम्बाई लगभग 965 किमी.
- राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा पर 241 KM लम्बी
- राजस्थान के अन्दर 135 KM लम्बी
- राजस्थान में कुल लम्बाई (241+135) = 376 किमी.

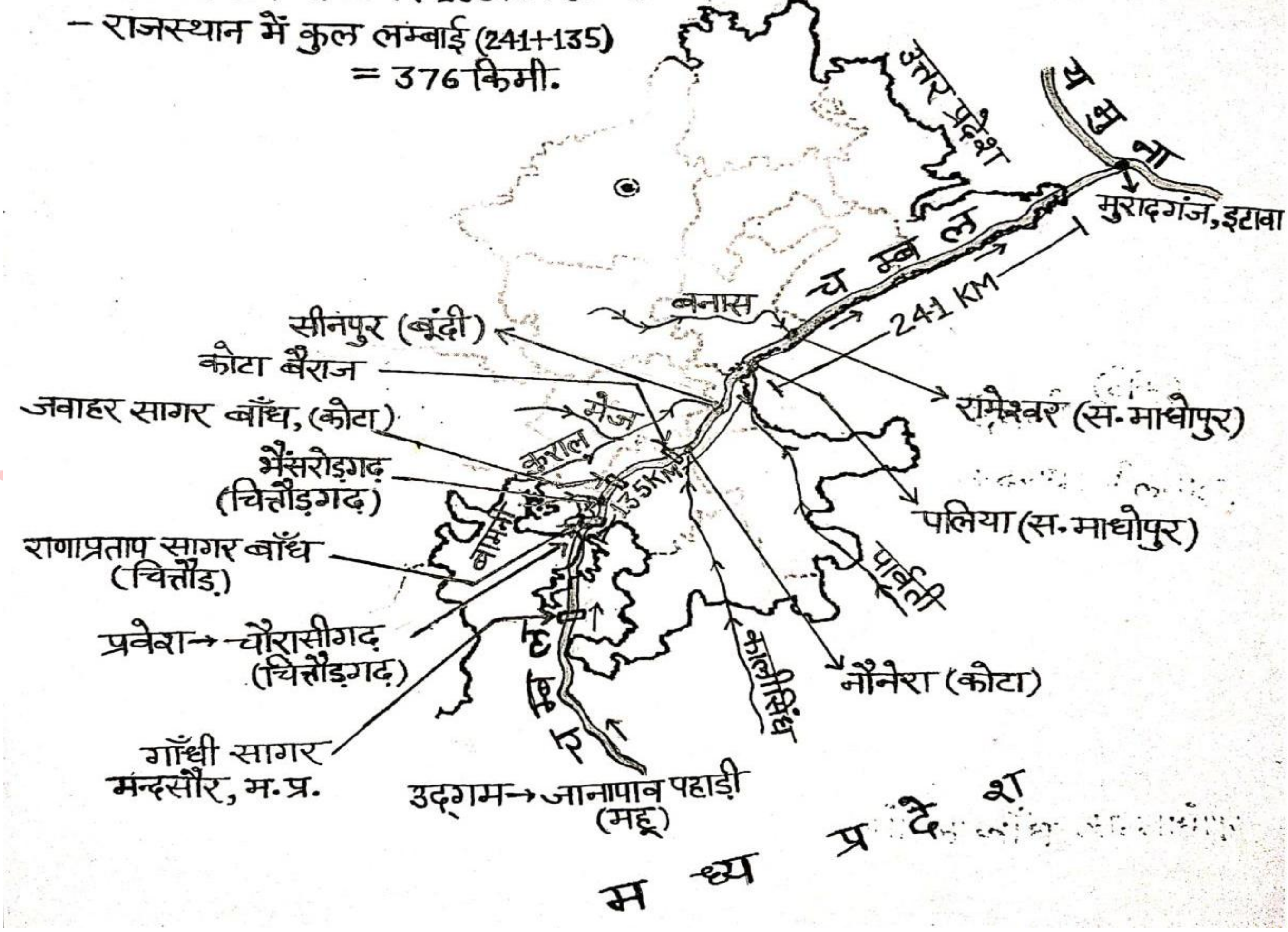


- चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्यीय सीमा निर्धारित करती है इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम है, चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी ।
- इस नदी की कुल लंबाई 966 किलों मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है यह नदी मध्यप्रदेश में 335 किलों मीटर, राजस्थान में 135 किलों मीटर, उत्तरप्रदेश में 275 किलों मीटर बहती है यह नदी राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के मध्य 251 किलों मीटर की अंतर्राज्यीय सीमा भी बनाती है।
- इस नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश राज्य के इंदौर जिलें हुआ । क्षेत्र के विंध्याचल पर्वतमाला में स्थित 616 मीटर ऊंची "जाना पाव की पहाड़ी" से होता है मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बांध "गांधी सागर बांध" बना हुआ है।
- यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिलें में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है इस नदी पर भैंसरोडगढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।

- एक चट्टान की आकृति महिला के समान (घूंघट निकाले स्त्री के समान) है इसे "ननरॉक" कहा जाता है । एक आकृति लड़का लड़की जैसी है जिसे "कपल रॉक " कहा जाता है इस झील के किनारे "सन् सेट पॉइंट तथा हनीमून पॉइंट " स्थित हैं।
- इस झील के किनारे की पहाड़ियों के बीच में राम कुंड के नीचे 16 वीं शताब्दी का रघुनाथ जी का मंदिर स्थित है। इसके अलावा हाथी गुंफा, चंपा, राम झरोखा रॉक अन्य दर्शनीय स्थल हैं।
- यह जनजाति का आध्यात्मिक केंद्र हैं । लोग अपने मृतकों की अस्थियों का विसर्जन इसी झील में ही करते हैं।
- इसके समीप ही "अबुजा देवी" का मंदिर स्थित है अतः इस पर्वत को आबू पर्वत कहा जाता है।

**7. आनासागर झील:-**

- राज्य के अजमेर जिलें में स्थित आना सागर झील का निर्माण 1137 ईस्वी में अर्णोराज (आनाजी) के द्वारा करवाया गया था ऐसा माना जाता है कि तुर्कों की सेना में हुए नरसंहार के बाद खून से रंगी हुई धरती को साफ करने के लिए इस झील का निर्माण करवाया गया था।
- आना सागर झील के तट पर जहांगीर द्वारा निर्मित एक दौलत बाग है। जिसे वर्तमान में 'सुभाष उद्यान' कहा जाता है सुभाष उद्यान नामक स्थान पर जहांगीर ने सर्वप्रथम सर टॉमसरो जो कि एक अंग्रेज था से वार्तालाप किया था तथा नूरजहां की मां अश्वत बेगम द्वारा गुलाब से इत्र बनाने की विधि का आविष्कार भी यही सुभाष उद्यान से किया गया था।
- जहांगीर द्वारा निर्मित 'चश्माए नूर' नामक झरना यहीं पर स्थित है जिस में वर्तमान में कुछ भी उपलब्ध नहीं है, केवल खंडहर मात्र उपलब्ध है।
- रूठी रानी का महल तथा या जहांगीर की बेगम नूर जहां का महल यही पर स्थित है
- आना सागर झील के तट पर 1627 में मुगल शासक शाहजहां ने पांच बारहदरियाँ का निर्माण किया था।

**8. कोलायत झील:-**

- इस झील का निर्माण राज्य के बीकानेर जिलें में किया गया । इस झील को "शुष्क उद्यान" भी कहा जाता है।
- झील के तट पर कपिल मुनि का आश्रम स्थित है । ऐसा माना जाता है कि कपिल मुनि ने अपनी माता की मुक्ति के लिए यहां पाताल गंगा निकाली थी इस कारण इसमें स्नान करने का महत्व गंगा के महत्व के लगभग बराबर माना जाता है।
- यहां पर एक अनूठी परंपरा है जिसे दीपदान कहा जाता है।
- इसी झील के तट पर कपिल मुनि का मंदिर स्थित है जहां प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को विशाल मेला का आयोजन किया जाता है।

**9. दुगारी झील:-**

- यह झील राज्य के बूँदी जिलें में दुगारी गांव में स्थित है।
- इस झील का क्षेत्रफल लगभग 3 वर्ग किलोमीटर है।
- यह झील कनक सागर के नाम से भी जानी जाती है। कहा जाता है कि इस झील का निर्माण 1880 ईस्वी में ₹200000 की लागत से किया गया था।
- इसे बूंदी जिलें का सर्वाधिक जल भंडार कहा जाता है।

**10. गजनेर झील:-**

- यह झील बीकानेर जिलें में बीकानेर से 32 किलोमीटर दूर स्थान पर स्थित है।
- यह लगभग 0.5 किलोमीटर लंबी तथा 183 मीटर चौड़ी है । इस झील का पानी नहाने और पीने के लिए उपयोग किया जाता है।
- यह एक छोटी झील है और इसके आस पास के क्षेत्रों में गेहूं की खेती की जाती है। इसका पानी साफ है और पीने योग्य है।
- इसके एक ओर महल के बगीचे बने हुए हैं शेष तीन भागों में वृक्ष है। यह झील दर्पण के समान प्रतीत होती है।

**राजस्थान की नदियों एवं जिलों से संबंधित अन्य महत्व पूर्ण परीक्षा उपयोगी तथ्य -**

- कनक सागर झील जिसे दुगारी झील भी कहा जाता है, राज्य के बूंदी जिलें में स्थित है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# अध्याय – 9

## पशुधन

### पशुपालन

### राजस्थान में 20 वीं पशुगणना

- 20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में कुल पशुधन 5.68 मिलियन (5.68 करोड़) है। जो कि 2012 की 5.77 लाख (5.77 करोड़) था। इस प्रकार 2019 में कुल पशुओं की संख्या में 1.66 प्रतिशत की कमी देखी गई है।
- राजस्थान 568 लाख पशुओं के साथ भारत में दूसरे स्थान पर है। पहला स्थान उत्तर प्रदेश का है।
- राजस्थान गोवंश के मामले में 2012 के 133 लाख की तुलना में 2019 में 139 लाख पशुओं के साथ छठे स्थान पर हैं। गोवंश में 4.41% की वृद्धि हुई है।
- राजस्थान भैंसों के मामले में 2012 के 1.30 लाख की तुलना में 2019 में 1.37 लाख पशुओं के साथ दूसरे स्थान पर हैं। भैंसों में 5.53% की वृद्धि हुई है।
- राजस्थान भेड़ की संख्या के मामले में 2012 के 9.1 मिलियन की तुलना में 2019 में 79 लाख पशुओं के साथ चौथे स्थान पर हैं। भेड़ में 5% की कमी हुई है।
- राजस्थान बकरी के मामले में 2012 के 216.7 लाख की तुलना में 2019 में 208.4 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर हैं। बकरियों की संख्या में 3.81% की कमी हुई हैं।
- राजस्थान ऊंट के मामले में 2012 के 3.26 लाख की तुलना में 2019 में 213 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर हैं। ऊंटों की संख्या में 34.69% की कमी हुई है।
- राजस्थान घोड़ों के मामले में 2012 के 38 लाख की तुलना में 2019 में 34 लाख पशुओं के साथ तीसरे स्थान पर हैं। घोड़ों की संख्या में 10.85% की कमी हुई है।
- राजस्थान गधों के मामले में 2012 के 81 लाख की तुलना में 2019 में 23 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर हैं। गधों में 71.31% की कमी हुई है।

| पशु | कुल संख्या (लाख) | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|---|
| बकरी | 208.4 | बाड़मेर | धौलपुर |
| गय | 139 | उदयपुर | धौलपुर |
| भैंस | 137 | जयपुर | जैसलमेर |
| भेड़ | 79 | बाड़मेर | बांसवाड़ा |
| ऊंट | 21.3 | जैसलमेर | प्रतापगढ़ |
| गधे | 23 | बाड़मेर | टोंक |
| घोड़े | 34 | बीकानेर | डूंगरपूर |

### राजस्थान में गाय की विभिन्न नस्लें

1. **गिर –** यह अजमेर भीलवाड़ा किशनगढ़ चित्तौड़गढ़ बूंदी आदि में पाई जाती है। मूल स्थान गुजरात है ।इसका अन्य नाम अजमेरी अथवा रेहना भी है ।यह अधिक दुध देने के लिए प्रसिद्ध है।
2. **थारपारकर-** यह जैसलमेर जोधपुर बाड़मेर में सांचौर में पाई जाती है। इसका मूल स्थान मालानी गांव जैसलमेर है।
3. **नागौरी-** यह नागौर जोधपुर बीकानेर नोखा आदि में पाई जाती है। इसका मूल स्थान नागौर जिले का सुहालक प्रदेश है। नागौरी बैल जोड़ने हेतु प्रसिद्ध है।
4. **राठी-** यह बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, व चूरू आदि में पाई जाती है ।यह लाल सिंधी व साहिवाल की मिश्रित नस्ल है जो दुध देने में अग्रणी है ।इसे राजस्थान की कामधेनु भी कहा जाता है।
5. **कांकरेज-** बाड़मेर सांचौर नेहड़ क्षेत्र में पाई जाती है ।इसका मूल स्थान गुजरात का कच्छ का रण है। बोझा ढोने व दुग्ध उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है। बेल अधिक बोझा ढोने एवं तीव्र गति के लिए प्रसिद्ध है।
6. **हरियाणवी-** सीकर झुंझुनू जयपुर गंगानगर हनुमानगढ़ आदि में पाई जाती है इसका मूल स्थान रोहतक हिसार में गुड़गांव हरियाणा है । यह दुग्ध भार वाहन दोनों दृष्टियों से उपयुक्त है।
7. **मालवी-** झालावाड़ डूंगरपुर बाँसवाड़ा कोटा से उदयपुर में पाई जाती है। मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र इसका मूल स्थान है मुख्यतया भारवाही नस्ल है। सांचौर उदयपुर पाली सिरोही में पाई जाती है। अलवर भरतपुर में हल जोतने हेतु प्रसिद् है।
8. **सांचोरी-** सांचौर उदयपुर, पाली, सिरोही, में पाई जाती है।
9. **मेवाती-** अलवर, भरतपुर, मैं पाई जाती है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

**नोट** – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

**संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083**

## प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 (cut off- 64) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 30 नवम्बर | 66 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 01 दिसम्बर | 65 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 13 सितम्बर | 113 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट) | 79 (150 में से) |

| | | |
|---|---|---|
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 95 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 56 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |

## & Many More Exams

**दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –**

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

**अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।**

| | |
|---|---|
| ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE | Website-<br>https://bit.ly/high-court-ldc |
| PHONE NUMBER | +918233195718<br>+918504091672<br>9694804063<br>01414045784, |
| TELEGRAM CHANNEL | https://t.me/infusion_notes |
| FACEBOOK PAGE | https://www.facebook.com/infusion.notes |
| WHATSAPP करें | https://wa.link/2vgzg6 |

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

# अध्याय – II

## जनसंख्या वितरण, विकास, साक्षरता, और लिंगानुपात

### 2021 की अनुमानित जनसंख्या

| | |
|---|---|
| 2020 में राजस्थान की अनुमानित जनसंख्या | 79,502,477 |
| 2021 में पुरुषों की अनुमानित जनसंख्या | 41,235,725 |
| 2021 में महिलाओं की अनुमानित जनसंख्या | 38,266,753 |

### 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या

| | |
|---|---|
| 2011 में राजस्थान की कुल आबादी | 68,548,437 |
| पुरुषों की जनसंख्या | 35,554,169 |
| महिलाओं की जनसंख्या | 32,994,268 |
| भारत की जनसंख्या (प्र.) | 5.66% |
| लिंगानुपात | 928 |
| बच्चों का लिंगानुपात | 888 |
| घनत्व (प्रति वर्ग कि.मी.) | 200 |
| घनत्व (मील प्रति वर्ग) | 519 |
| क्षेत्र (प्रति वर्ग कि.मी.) | 342,239 |
| क्षेत्र (मील प्रति वर्ग) | 132,139 |
| बच्चों की जनसंख्या 0-6 वर्ष | 10,649,504 |
| लड़कों की जनसंख्या 0-6 वर्ष | 5,639,176 |
| लड़कियों की जनसंख्या 0-6 वर्ष | 5,010,328 |
| साक्षरता | 66.11% |
| साक्षरता पुरुष (प्र.) | 79.19% |
| साक्षरता महिलाएं (प्र.) | 52.13% |
| कुल साक्षर | 38,275,282 |

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | बांरा | 1222755 | 633945 | 588810 | 19.7 | 929 | 175 | 66.7 | 80.4 | 52.0 |
| 32 | झालावाड़ | 1411129 | 725143 | 685986 | 19.6 | 946 | 227 | 61.5 | 75.8 | 46.5 |
| 33 | प्रतापगढ़ | 867848 | 437744 | 430104 | 22.8 | 983 | 195 | 56.0 | 69.5 | 42.4 |

**सर्वाधिक दशकीय वृद्धि वाले 5 जिलें**

| जिला | प्रतिशत |
|---|---|
| 1. बाड़मेर | 32.5 |
| 2. जैसलमेर | 31.8 |
| 3. जोधपुर | 27.7 |
| 4. बाँसवाड़ा | 26.5 |
| 5. जयपुर | 26.2 |

**न्यूनतम**

| जिला | प्रतिशत |
|---|---|
| गंगानगर | 10.0 |
| झुंझनु | 11.7 |
| पाली | 11.7 |
| बूंदी | 11.9 |
| चित्तौड़गढ़ | 15.4 |

| | |
|---|---|
| 2001-2011 के दौरान सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि वाला जिला | बाड़मेर (32.5%) |
| 2001-2011 के दौरान न्यूनतम जनसंख्या वृद्धि वाला जिला | गंगानगर ( 10.00%) |
| 2001-2011 के दौरान सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि वाला जिला | जैसलमेर ( 34.5% ) |
| 2001-2011 के दौरान न्यूनतम जनसंख्या वृद्धि वाला जिला | कोटा (6.1%) |
| 2001-2011 के दौरान सर्वाधिक शहरी जनसंख्या वृद्धि वाला जिला | अलवर ( 50.5% ) |
| 2001-2011 के दौरान न्यूनतम शहरी जनसंख्या वृद्धि वाला जिला | डूंगरपुर (9.8%) |
| जनसंख्या घनत्व | 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. |

**सर्वाधिक जनघनत्व वाले 5 जिलें**

| | |
|---|---|
| 1. जयपुर | 595 |
| 2. भरतपुर | 503 |
| 3. दौसा | 476 |

## राजस्थान की जनजातियाँ

### सहरिया :

- राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति (भारत सरकार द्वारा घोषित)।
- बारां जिले के किशनगंज एव शाहबाद जिलों में सर्वाधिक संख्या।
- **सहरियों का मुखिया** : कोतवाला
- बडें गांव को 'सहराना' कहा जाता है।
- छोटो बस्ती को 'सहरोल' कहा जाता है।
- गाँव के बीच में स्थित सामुदायिक केन्द्र दालिया/हथाई कहलाता हैं।
- सहरियों की पंचायती व्यवस्था त्रि-स्तरीय होती है /
- **पंचताई** : पाँच गाँवों की पंचायती।
- **एकदसिया** : 11 गाँवों की पंचायती।
- **चौरासिया** : 84 गाँवों की पंचायती।
- चौरासी गाँवों की सभा सीताबाडो के वाल्मिकि मंदिर में होती है।
- सहरिया 'वाल्मिकि' को अपना आदि पुरूष मानते है।
- सहरियों की कुलदेवी कोडिया माता।
- तेजाजी एवं भैरव की भी पूजा करते हैं ।
- दीपावली पर 'हीड़' गाते हैं।
- होली के अवसर पर लट्ठमार होली खेलते हैं। राई नृत्य किया जाता है।
- मकर संक्रान्ति के अवसर पर लकड़ी के डण्डो से लेंगी खेला जाता है।
- वर्षा ऋतु में आला एवं लहंगी गीत गाया जाता है।
- **कपिलधारा का मेला** : कार्तिक पूर्णिमा
- **सीताबाड़ी का मेला** : ज्येष्ठ पूर्णिमा। इसे 'सहरियों का कुम्भ' भी कहते हैं।
- सहरिया महिलाएँ गोदना गुदवाती हैं परंतु पुरुषों का मनाही है।
- **धारी संस्कार** : मृतक के तीसरे दिन उसकी अस्थियों एवं राख को एक बर्तन से ढककर छोड़ दिया जाता है, अगले दिन उस जगह वैसी ही आकृति बनी होती है, यह समझा जाता है कि व्यक्ति का अगला जन्म उसी आकृति के अनुसार होगा।
- सहरिया पेड़ों पर घर बनाकर रहते हैं। उसे 'गोपना' कहते हैं ।
- अनाज एवं घरेलू सामान रखने की छोटी कोठी : कुसिली।
- अनाज व घरेलू सामान रखने की बड़ी कोठी : भडली।

**अर्थव्यवस्था :** सहरिया लोगों को जहाँ संमतल भूमि मिल जाती है पर कृषि एवं पशुपालन करते हैं। कृषि कार्यों में 45 प्रतिशत, कृषक मजदूरी 35 प्रतिशत कार्यों में संलग्न व शेष वनों से लकड़ी व वन उपज एकत्रित करना, खनन कार्य करना। इस जाति में शिक्षा का अत्यंत अभाव है। अब शिक्षा का विकास हो रहा हैं। सहरिया क्षेत्र में मामूनी की. संकल्प संस्था , अच्छा कार्य कर रही है ।

### कंजर :-

- मुख्यतया हाड़ौती क्षेत्र में।
- मुख्य व्यवसाय : चोरी करना।
- चोरी करने से पूर्व देवता से आशीर्वाद मांगते है, जिसे ये 'पातो मांगना' कहते है।
- जोगणिया माता (चितौड़गढ़) : कंजरों की कुलदेवी।
- चौथ माता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर)
- रक्त दंजी माता : बूंदी।
- हनुमान जी : आराध्य देव।
- हाकम राजा का प्याला पीने के बाद झूठ नहीं बोलते हैं।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में शराब डाली जाती है।
- शव को दफनाते हैं।
- इनके मुखिया को 'पटेल' कहते है।
- मोर का मांस खाते है।
- इनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की अनिवार्य होती है।
- महिलाएँ चकरी नृत्य करती है। नृत्य करते समय विशेष प्रकार का पायजामा पहनते है, जिसे 'खूसनी' कहते हैं।

**अर्थव्यवस्था –**

कुछ लोग ठेला , टेम्पू चलाते है | ईश्वर का आशीर्वाद भी प्राप्त करते हैं | इसे पाती मांगना कहते है |

### कथौड़ी :-

- उदयपुर जिलें में अधिक संख्या में।
- मूल रूप से महाराष्ट्र के हैं।
- खैर के वृक्ष से कत्था बनाते है इसलिए कथौड़ी कहते हैं।

# राजस्थान का इतिहास

## अध्याय – 1

## राजस्थान इतिहास के स्रोत

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है - ऐसा निश्चित रूप से हुआ है। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है । भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं ।

- राजस्थान इतिहास के जनक कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1821 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा।
- अतः कर्नल टॉड को "घोड़े वाले बाबा" कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तक का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- अभिलेखों के अध्ययन को एपिग्राफी कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।
- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े के गुंबज की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

**अशोक के अभिलेख :-**

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले हैं।
- भाब्रू अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।

**बड़ली का अभिलेख :-**

- यह राजस्थान का सबसे प्राचीनतम अभिलेख है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।

**बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-**

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ सिरोही से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।

**मानमोरी का अभिलेख :-**

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।

**मण्डोर अभिलेख :-**

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

**बड़वा अभिलेख :-**

- यह बड़वा (कोटा) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है।

**कणसवा का अभिलेख :-**

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।

**आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-**

- 944 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।

- लल्लू लिया नामक सिक्के का निर्माण सोजत में किया जाता था।
- प्रतिहार शासक मिहिर भोज के सिक्कों पर वराह अवतार का अंकन मिलता है।

**एलची** :- अकबर द्वारा चित्तौड़ विजय के पश्चात जारी किए गए सिक्के।

**पारूथद्रम** :- मालवा के परमारों की मुद्रा।

**आहत मुद्रा** :-इन सिक्कों को ठप्पा मारकर बनाए जाने के कारण इन्हें आहत मुद्रा कहते हैं।
आहत सिक्के पर पाँच चिह्न/आकृति (पेड़, मछली, सांड, हाथी व अर्द्धचन्द्र) के चिह्न अंकित होते थे।

- इन सिक्कों को आहत मुद्रा नाम जेम्स प्रिंसेप द्वारा 1835 ई. में दिया गया।

**इण्डो-ग्रीक मुद्राएँ** :- भारत में सर्वप्रथम लेखयुक्त सोने के सिक्के भारतीय-यवन (इण्डो-ग्रीक) शासकों ने जारी किये थे जो तीसरी-चौथी शताब्दी ईस्वी पूर्व के हैं।

- आहड़ में उत्खनन से इण्डो-ग्रीक सिक्के मिले हैं, जिनमें अपोलो, देवता, महाराज त्रत्रवर्स, विरहम विस तथा पलितस आदि अंकित हैं।
- सिक्कों के सम्बन्ध में 'क्रोनिकल्स ऑफ द पठान किंग्स ऑफ डेहली' नामक पुस्तक एडवर्ड थॉमस ने लिखी है।

**आहड़ से प्राप्त सिक्के** :- आहड़ से 6 ताँबे की मुद्राएँ मिली हैं।

- इसके अलावा यहाँ से इण्डो-ग्रीक मुद्राएँ तथा कुछ मुहरें प्राप्त हुई हैं।

**रैढ़ (टोंक) से प्राप्त सिक्के :-**

- रैढ़ में उत्खनन से 3075 चाँदी के पचंमार्क सिक्के मिले हैं जो देश में उत्खनन से प्राप्त सिक्कों की सर्वाधिक संख्या है।
- ये सिक्के मौर्यकाल के हैं जिन्हें 'धरण' या 'पण' कहा जाता था।
- इन सिक्कों का वजन 57 ग्रेन (32 रत्ती या $3^{3}/_{4}$ ग्राम) है तथा इनका समय छठी शताब्दी ई. पूर्व से द्वितीय शताब्दी ई. पूर्व है।
- रैढ़ सभ्यता से एशिया का अब तक का सबसे बड़ा सिक्कों का भण्डार मिला है।

**बैराठ से प्राप्त सिक्के :-**

- बैराठ में उत्खनन से कपड़े में बंधी हुई 8 आहत मुद्राएँ प्राप्त हुई है।

**रंगमहल से प्राप्त सिक्के :-**

- यहां से प्राप्त सिक्को पर यूनानी भाषा में "नानाइया" व "ओडो वाय" लिखा हुआ है।
- रंगमहल (हनुमानगढ़) से 105 ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं जिनमें आहत तथा कुषाण कालीन मुद्राएँ शामिल है।
- यहाँ से प्राप्त कुषाण कालीन सिक्कों को मुरण्डा कहा गया है।
- रंगमहल से कुषाण शासक कनिष्क का भी सिक्का प्राप्त हुआ है।

**सांभर से प्राप्त सिक्के :-**

- सांभर (जयपुर) में उत्खनन से 200 मुद्राएँ प्राप्त हुई है जिनमें पंचमार्क तथा इण्डो सेसेनियम मुद्राएँ शामिल है।
- यहाँ से यौधेय जनपद की तथा इण्डो-ग्रीक मुद्राएँ भी प्राप्त हुई है। एक यौधेय सिक्के पर ब्राह्मी लिपि में 'बाबुधना' तथा 'गण' अंकित है।

**नगर (टोंक) से प्राप्त सिक्के :-**

- टोंक जिले के नगर या कर्कोट नगर से कार्लाइल को लगभग 6 हजार ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए थे।
- इन पर ब्राह्मी लिपि में मालव जनपद के लगभग 40 सरदारों के नाम अलग-अलग अंकित मिलते हैं।

**यौधेय जनपद के सिक्के :-**

- राजस्थान के प्राचीन समय के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित यौधेय जनपद से सिक्के मिले हैं।
- इन सिक्कों पर नंदी एवं स्तंभ का अंकन तथा ब्राह्मी लिपि में 'यौधेयानां बहुधान' लिखा हुआ मिला है।
- चौथी सदी ईसा के सिक्कों में 'कार्तिकेय' या 'देव' या 'सूर्य की मूर्ति' का अंकन मिलता है।

**गुप्तकालीन मुद्राएँ :-**

- 1948 में भरतपुर जिले की बयाना तहसील के नगलाछैल गाँव से सर्वाधिक गुप्तकालीन स्वर्ण

**नोट** – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

**संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083**

## प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 (cut off- 64) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 30 नवम्बर | 66 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 01 दिसम्बर | 65 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 13 सितम्बर | 113 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट) | 79 (150 में से) |

| | | |
|---|---|---|
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 95 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 56 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |

## & Many More Exams

**दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –**

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

**अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।**

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

| | |
|---|---|
| ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE | Website- https://bit.ly/high-court-ldc |
| PHONE NUMBER | +918233195718<br>+918504091672<br>9694804063<br>01414045784, |
| TELEGRAM CHANNEL | https://t.me/infusion_notes |
| FACEBOOK PAGE | https://www.facebook.com/infusion.notes |
| WHATSAPP करें | https://wa.link/2vgzg6 |

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

विजयपाल द्वितीय ( 960 ई. ) इनके समय गुर्जर-प्रतिहारों की अवनति हुई।

**राज्यपाल :-**

- प्रतिहार शासक राज्यपाल (राजपाल) के समय महमूद गजनवी ने कन्नौज पर 1018 ई. (12वां अभियान) में आक्रमण किया, जिससे डरकर राज्यपाल कन्नौज छोड़कर गंगा पार भाग गया ।

**त्रिलोचनपाल :-**

- राज्यपाल के बाद त्रिलोचनपाल प्रतिहारों का शासक बना ।
- जिसे महमूद गजनवी ने 1019 ई. में पराजित किया ।

**यशपाल :-**

- प्रतिहार वंश का अंतिम शासक यशपाल (1036 ई. ) था ।
- 11वीं शताब्दी में कन्नौज पर गहड़वाल वंश ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया । इस प्रकार प्रतिहारों के साम्राज्य का 1093 ई. में पतन हो गया ।

# अध्याय – 4

## मेवाड़ का इतिहास

- मेवाड़ रियासत राजस्थान की सबसे प्राचीन रियासत है, इसे मेदपाट, प्राग्वाट, शिवि जनपद आदि उपनामों से जाना जाता है। मेवाड़ के शासक एकलिंगनाथजी को स्वयं के राजा / ईष्टदेव तथा स्वयं को एकलिंगनाथजी का दीवान मानते हैं। गुहिल वंश की कुल देवी बाण माता है। मेवाड़ रियासत के सामन्त 'उमराव कहलाते थे। मेवाड़ के महाराणा राजधानी छोड़ने से पहले एकलिंगजी से आज्ञा लेते थे, उसे 'आसकाँ' मांगना कहते थे। मेवाड़ के महाराणा 'हिन्दुओं का सूरज' कहलाते हैं क्योंकि वो स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं। गुहिल वंश के राजध्वज पर 'उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित हैं, इसमें उदयपुर का राजवाक्य "जो धर्म को, तिहिं राखै करतार अंकित है। ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ रहने के संकेत देते हैं ।
- गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने इन्हें विशुद्ध सूर्यवंशीय क्षत्रिय माना है। मेवाड़ राजवंश की स्थापना ईसा की पाँचवी शताब्दी में गुहिल नाम के एक प्रतापी राजा ने की थी। भारत की आजादी के समय यह विश्व का सबसे पुराना राजवंश था ।
- मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासको का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :-

**गुहिल वंश के शासक**

**गुहिल । गुहिला दित्य । गुहादित्य**

**राजा गुहिल का जीवन परिचय :-**

- विजयभूप ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में शिलादित्य नामक व्यक्ति वल्लभीनगर का शासक बना । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास अबुर्दा देवी मंदिर चली जाती है । पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ोसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । रानी पुष्पावती

अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए वीरनगर नामक स्थान पर कमलाबाई नामक विधवा ब्राह्मणी के घर रहने लगीं । कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गई। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम गुहिल रखा दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।

- बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला । गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहुँचा लेकिन उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था । 566 ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।
- भगवान राम के पुत्र कुश का वंशज गुहिल ने 565 ई. में नागदा (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

## बप्पारावल / बापा रावल (734 ई. 810 ई.)

उपाधि- रावल (भीलों ने दी ). हिन्दू - सूर्य , राजगुरु , चक्कवै कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार गुहिल वंश के राजा नागादित्य की हत्या के बाद उसकी पत्नी अपने पुत्र बप्पा को लेकर बड़ नगरा जाति की कमलावती के वंशजो के पास ले गई । बप्पा रावल हरित ऋषि की गायें चराता था । बप्पा पाशुपत संप्रदाय का अनुयायी था ।

- सिक्का – बप्पा रावल द्वारा जारी किए गए सिक्के पर कामधेनु (नंदी ), बोप्पा शब्द, त्रिशुल अंकित है, जो उनकी शिव भक्ती को दर्शाता है ।
- 738 में बप्पा रावल ने अरबी आक्रमण कारी जुनैद को हराया ।
- बप्पा रावल ने कई शादियां की जिनसे उन्हें 130 पुत्र प्राप्त हुए , जिन्हें "नौशेरापठान " कहा जाता है ।,
- तलवार का वजन लग भग -32 kg.
- उनके बारे में कहा जाता है कि वे 35 हाथ की धोती व 16 हाथ का दुपट्टा पहनते थे ।

बप्पा रावल राजा गुहादित्य के 8 वें वंशज थे ।

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा बप्पारावल का जन्म 713 ई. में ईडर में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को सिसोदिया भी कहा जाता है, जिनमें आगे चलकर महान राजा राणा कुम्भा, राणा साँगा, महाराणा प्रताप हुए।
- बप्पा रावल जब मात्र 3 वर्ष के थे तब यह और इनकी माता असहाय महसूस कर रहे थे, तब भील समुदाय ने दोनों की मदद कर सुरक्षित रखा, बप्पा रावल का बचपन भील जनजाति के बीच रहकर बीता, बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई । सन् 712 ई. में मुहम्मद कासिम से सिंधु को जीता। बापा रावल के मुस्लिम देशों पर विजय की अनेक दंतकथाएँ अरबों की पराजय की इस सच्ची घटना से उत्पन्न हुई होगी।

- **आदि वराह मंदिर** - यह मंदिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी । बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया। बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 33 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी । 738 ई. बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनैद बिन अब्दुल रहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया बप्पा रावल ने सिंधु के मुहम्मद बिन कासिम को पराजित किया बप्पा रावल ने गज़नी के शासक सलीम को पराजित किया । महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन् 753) ई. दिया है।
- उनका बचपन का नाम राजकुमार कालभोज था।
- लगभग 20 वर्ष तक शासन करने के बाद उन्होंने वैराग्य ले लिया और अपने पुत्र को राज्य देकर शिव की उपासना में लग गये।
- बप्पा रावल के सिक्के : गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अजमेर के सोने के सिक्के को बप्पा रावल का माना है। इस सिक्के का बप्पा रावल को कालभोजादित्य के नाम से भी जाना जाता है इनके समय चित्तौड़ पर मौर्य शासक मान मोरी का राज था। 734 ई. में बप्पा रावल ने 20 वर्ष की आयु में मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार किया।

# अध्याय – 8

# बीकानेर के वंशज

### राव बीका ( 1465-1504)

- राव बीका, राव जोधा का दूसरा पुत्र था तथा प्रथम पुत्र नीबा था । राव जोधा ने अपनी रानी जसमादे के प्रभाव के कारण बीका को जोधपुर का राज्य न देकर सातल को दिया । इस कारण राव बीका ने अपने चाचा कांधल के साथ जांगल देश को विजित किया, जो कि मारवाड़ के उत्तर में स्थित था ।
- दयालदास की ख्यात व वीर विनोद के अनुसार बीका, जोधा का दूसरा पुत्र था । प्रथम पुत्र नीबा था, जिसकी असामयिक मृत्यु हो गयी थी । राव बीका की माता का नाम साँखली रानी नौंरगदे था ।
- राव बीका की शादी पुगल के शासक 'राव शेखा' की पुत्री ' रंगदे' से हुई । इस वैवाहिक सम्बन्ध के बाद बीका ने कोड़मदेसर नामक स्थान पर रहने का निश्चय किया । राव बीका ने 1465 ई. में इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया । राव बीका ने अपनी प्रथम राजधानी 'कोडमदेसर' को बनाया तथा यहाँ भैरव की मूर्ति को स्थापित कर भैरव मंदिर बनवाया ।
- राव बीका ने यहाँ एक विशेष छोटी सी हल्की खाट बनवाई थी , ताकि वह अपने दादा द्वारा भोगे दुर्भाग्य से स्वयं को बचाने के लिए सोते समय किनारों पर अपने पैर लटका सके । रणमल की पत्नी कोड़मदे ने कोडमदेसर बावड़ी का निर्माण करवाया ।
- बीका ने सन् 1485 ई. में रातीघाटी में बीकानेर गढ़ की नींव रखी जो 1488 ई. में बनकर पूर्ण हुआ ।
- 12 अप्रैल , 1488 ई. में उस गढ़ के पास बीका ने अपने नाम पर बीकानेर नगर/शहर बसाया । इसकी की नींव राव बीका ने करणी माता के आर्शीवाद से बैशाख शुक्ल तृतीया (आखातीज) को रखी ।
- प्रत्येक वर्ष आखातीज को बीकानेर स्थापना दिवस के रूप मे मनाया जाता है ।
- राव बीका को बीकानेर के राठौड़ वंश का संस्थापक माना जाता है । बीकानेर को प्राचीनकाल में 'रातीघाटी' के नाम से जाना जाता था । नागौर, अजमेर तथा मुल्तान के मार्ग जहाँ मिलते थे, उस स्थान को पहले 'रातीघाटी' के नाम से जाना जाता था ।
- राव बीका ने देशनोक (जोखा) में करणीमाता के मूल मंदिर का निर्माण करवाया । करणीमाता का मूल नाम रिद्धिबाई था ।
- इस मंदिर को आधुनिक स्वरूप महाराजा सूरत सिंह ने दिया । करणीमाता को चूहों की देवी के उपनाम से भी जाना जाता है ।
- करणीमाता के सफेद चूहों को काबा कहा जाता है । करणीमाता बीकानेर के राठौड़ व चारणों की कुलदेवी है ।
- करणी माता चारण जाति की थी । चारण जाति के लोग बीकानेर की कोलायत झील में स्नान नहीं करते है ।
- राव बीका ने बीकानेर में नागणेची माता के मंदिर का निर्माण करवाया ।
- राव बीका ने एक दुर्ग के निर्माण की प्रक्रिया भी प्रारंभ की लेकिन उसे पूर्ण नहीं कर सका, जिसे वर्तमान में बीका जी की टोकरीटेकरी कहते हैं ।

### राय लूणकरण (1505-1526 ई.)

- (1505 -1526 ई.) अपने बड़े भ्राता राव नरा की मृत्यु के बाद साहसी योद्धा राव लूणकरण 23 जनवरी 1505 ई. को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। लूणकरण ने अपने पराक्रम से बीकानेर राज्य का पर्याप्त विस्तार किया तथा जैसलमेर नरेश रावल जैतसी को हरा कर उन्हें समझौतो के लिए बाध्य किया। सन् 1526 में उन्होंने नारनौल के नवाब पर आक्रमण कर दिया परन्तु धौसा नामक स्थान पर हुए युद्ध में वे मारे गये । उनके बाद उनके पुत्र राव जैतसी बीकानेर की गद्दी पर बैठे । लूणकरण अपनी दानशीलता के लिए बहुत प्रसिद्ध हुआ । इसलिए 'कर्मचंद्रवंशोत्कीर्तनकम काव्यम्' में उसकी दानशीलता की तुलना कर्ण से की है ।
- विठू सूजा ने अपनी रचना ' राव जैतसी रो छन्द ' में राव लूणकरण को ' कलयुग का कर्ण कहा है ।
- दानशीलता के कारण राव लूणकरण को कर्ण की उपमा दी गई गई है ।
- राव जैतसी ने चायलवाड़ा के स्वामी पूना पर आक्रमण किया लेकिन पूना सूचना पाकर भाग गया ।
- 1526 में धौसा नामक स्थान पर इसकी मृत्यु हो गई थी

# अध्याय – 11

## राजस्थान में 1857 की क्रांति

### 1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत -

- डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था ।
- डॉ. रामविलास शर्मा- यह जनक्रांति थी ।
- डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था ।
- वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस) ।
- एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था ।
- सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रेविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था ( इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंद्योपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत है । )
- जवाहरलाल नेहरु - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था ।
- सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है ।
- क्रांति के प्रमुख कारण ( Reason of 1857 Revolution )
- देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
- लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ ।
- चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड) ।
- 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी ।
- 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था । इस रायफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली की इनमें लगने वाले कारतूसों में गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती है ।
- कारतूस का प्रयोग करने से पूर्व उसके खोल को मुंह से उतरना पड़ता था जिससे हिंदू तथा मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट होता है । परिणाम स्वरुप 1857 का विद्रोह प्रारंभ हुआ ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था ।
- अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था ।
- अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15वीं नेटिव इन्फेंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची ।

इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था

### राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट

1. कोटा रियासत में - मेजर बर्टन
2. जोधपुर रियासत में - मेक मैसन
3. भरतपुर रियासत में - मोरिशन
4. जयपुर रियासत में – कर्नल ईडन
5. उदयपुर रियासत में - शावर्स और
6. सिरोही रियासत में - जे.डी.हॉल थे

### राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक ( Rajasthan Rajput ruler in revolution )–

- कोटा रियासत में - रामसिंह
- जोधपुर रियासत में - तख्तसिंह
- भरतपुर रियासत में - जसवंत सिंह
- उदयपुर रियासत में - स्वरूप सिंह
- जयपुर रियासत में - रामसिंह द्वितीय
- सिरोही रियासत में - शिव सिंह
- धौलपुर रियासत में - भगवंत सिंह
- बीकानेर रियासत में - सरदार सिंह
- करौली रियासत में - मदनपाल
- टोंक रियासत में - नवाब वजीरुद्दौला
- बूँदी रियासत में - रामसिंह
- अलवर रियासत में - विनयसिंह
- जैसलमेर रियासत में – रणजीत सिंह
- झालावाड रियासत में – पृथ्वीसिंह

- प्रतापगढ़ रियासत में – दलपत सिंह
- बाँसवाड़ा रियासत में - लक्ष्मण सिंह और
- डूंगरपुर रियासत में - उदयसिंह थे ।

राजस्थान में क्रांति के समय 6 सैनिक छावनियां थी जिनमें से खेरवाड़ा (उदयपुर) और ब्यावर (अजमेर) सैनिकों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया था ।

**सैनिक छावनियां ( Military Encampment )**

1. नसीराबाद (अजमेर)
2. नीमच (मध्य प्रदेश)
3. एरिनपुरा (पाली)
4. देवली (टोंक)
5. ब्यावर (अजमेर)
6. खेरवाड़ा (उदयपुर)

**NOTE** – खैरवाड़ा व ब्यावर सैनिक छावनीयों ने इस सैनिक विद्रोह में भाग नहीं लिया।

**राजस्थान में 1857 की क्रांति का आरम्भ**

- 1857 Revolution के समय भारत का गवर्नर जनरल " लॉर्ड केनिंग " था ।
- जब AGG जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस को मेरठ में सैनिक क्रांति की सूचना मिली तब वह माउन्ट आबू में था।
- AGG को मेरठ में क्रांति की सूचना 19 मई 1857 को मिली ।
- जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस ने अजमेर के मैगजीन दुर्ग में तैनात 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री (NI) को नसीराबाद भेज दिया।
- मैगजीन दुर्ग में अंग्रेजों का शस्त्रागार तथा सरकारी खजाना रखा हुआ था।
- इस दुर्ग का नाम अकबर द्वारा रखा गया था।
- AGG ने देशी राजाओं को पत्र लिखकर 1817-1818 की सहायक संधियों का स्मरण कराया तथा क्रांति के दमन हेतु सहयोग माँगा ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त के प्रशासनिक नियंत्रण में था।
- उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त का मुख्यालय आगरा में था और इस प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलवीन था।

**नसीराबाद में क्रांति**

- राजस्थान में 1857 की क्रांति का बिगुल नसीराबाद छावनी के सैनिकों ने बजाया।
- यहाँ अजमेर से अचानक भेजी गई 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों में असन्तोष व्याप्त हो गया था । इसके अतिरिक्त सरकार ने चर्बी वाले कारतूसों का विरोध होने के कारण इसके प्रयोग को बंद करने के आदेश दिए जिससे सैनिकों का संदेह और भी दृढ हो गया ।
- 30 वीं नेटिव इन्फेंट्री यहाँ पहले से ही तैनात थी।
- 28 मई 1857 को 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों ने विद्रोह कर अपने अधिकारी प्रिचार्ड का आदेश मानने से इन्कार कर दिया।
- विद्रोही सैनिकों ने छावनी में मौजूद अंग्रेजों के मेजर स्पोटिस वुड तथा न्यूबरी की हत्या कर दी और दिल्ली कूच कर गए।
- बख्तावर सिंह द्वारा यहाँ विद्रोहियों का नेतृत्व किया गया।
- लेफ्टिनेंट माल्टर, व लेफ्टिनेंट हेथकोट के नेतृत्व में मेवाड़ के सैनिकों ने विद्रोहियों का पीछा किया लेकिन असफल रहे।

**नीमच में क्रांति**

- 2 जून 1857 को नीमच में कर्नल एबॉट ने हिन्दू व मुस्लिम सैनिकों को अंग्रेजों के प्रति वफादारी के लिए गीता व कुरान की शपथ दिलाई।
- अवध के एक सैनिक मोहम्मद अली बेग ने इसका विरोध किया ओर कर्नल एबॉट की हत्या कर दी।
- 3 जून 1857 को नीमच छावनी में क्रांति भड़क गई । यहाँ हीरालाल द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया।
- यहाँ मौजूद 40 अंग्रेजों ने भागकर डूंगला गाँव में रूंगाराम किसान के यहाँ शरण ली।
- मेवाड़ के सैनिक इन्हें उदयपुर ले गये जहाँ महाराणा स्वरूप सिंह ने इन्हें जगमंदिर पैलेस में ठहराया।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति के दमन में अंग्रेजों का साथ देने वाला राजपूताने का पहला शासक मेवाड़ का स्वरूप सिंह था।
- नीमच के विद्रोही सैनिकों ने आगरा पहुँचकर वहाँ जेल में बन्द कैदियों को मुक्त कर दिया। विद्रोहियों ने आगरा के सरकारी खजाने से एक लाख छब्बीस हजार रुपये लूट लिये।
- नीमच के सैनिकों ने देवली छावनी होते हुए दिल्ली कूच किया।
- शाहपुरा के शासक लक्ष्मण सिंह ने नीमच के विद्रोही सैनिकों को सहायता व शरण दी।

- उपरोक्त घटना के समय डूंगरपुर रियासत के शासक रावल लक्ष्मण सिंह थे।

### 8. हार्डिंग बम काण्ड

- 23 दिसंबर 1912 को भारतीय गवर्नर जनरल लॉर्ड हार्डिंग के जुलूस पर दिल्ली के चांदनी चौक में राजस्थान के क्रांतिकारी जोरावर सिंह बारहठ व प्रताप सिंह बारहठ ने बम फेंका इस बम काण्ड में लॉर्ड हार्डिंग बच गए परन्तु उनका अंगरक्षक मारा गया।
- प्रताप सिंह बारहठ को गिरफ्तार करके बरेली जेल में रखा गया जहां 27 मई 1918 के दिन जेल में यातना सहते हुए प्रताप सिंह की मृत्यु हो गई ।
- इस काण्ड में अर्जुनलाल सेठी को बेलूर जेल में भेज दिया गया ।
- अंग्रेज अधिकारी चार्ल्स क्लीवलैंड ने प्रताप से कहा था कि " तेरी मां तेरे लिए दिन रात रोती है" ।

## अध्याय – 13

## प्रजामंडल आंदोलन

- 1927 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना के साथ ही सक्रिय राजनीति का काल आरम्भ हुआ ।
- कांग्रेस का समर्थन मिल जाने के बाद इसकी शाखायें स्थापित की जाने लगी।
- 1931 ई.में रामनारायण चौधरी ने अजमेर में देशी राज्य लोक परिषद् का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित किया ।
- 1938 ई.में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के लोगों द्वारा चलाये जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन दिया ।
- कांग्रेस के इस प्रस्ताव से देशी रियासतों में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन मिला। इन राज्यों में चल रहे आन्दोलन प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस से जुड़ गये और राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। प्रजामंण्डल की स्थापना हुई, जिसने देशी शासकों के अधीन उत्तरदायी प्रशासन की मांग की ।

| क्र. सं. | प्रजामंडल नाम | स्थापना वर्ष | गठनकर्ता | अध्यक्षता | प्रमुख नेता/ कार्य/सहयोगी | उद्देश्य |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | जयपुर प्रजामंडल | 1931 | जमनालाल बजाज | कपूर चन्द्र पाटनी | हीरालाल शास्त्री, जमनालाल बजाज | |
| | | 1936 | | | हीरालाल शास्त्री, बाब हरिश्चन्द्र, टीकाराम पालीवाल, लादूराम जोशी, हंस डी. राय. पूर्णानिन्द जोशी | |
| 2. | बूँदी प्रजामण्डल | 1931 | कांतिलाल | कांतिलाल | नित्यानन्द सागर, गोपाललाल कोटिया,गोपाललाल जोशी, मोतीलाल अग्रवाल,पूनम चन्द्र | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | बूँदी राज्य प्रजा परिषद् | 1937 | ऋषिदत्त मेहता | चिरंजीलाल मिश्र | बृज सुन्दर शर्मा |
| 3. | हाड़ौती प्रजामण्डल | 1934 | पं. नयनूराम शर्मा | हरिमोहन माथुर | प्रभुलाल शर्मा, पं. अभिन्न हरि |
| 4. | मारवाड़ (जोधपुर ) प्रजामण्डल | 1934 | जयनारायण व्यास | मोहम्मद | आनन्दराज सुराणा, मथुरादास माथुर, रणछोड़दास गट्टानी, इन्द्रमल जैन, कन्हैयालाल मणिहार, चांदकरण शारदा, छगनलाल चौपसनीवाल, अभयमल मेहता |
| 5. | सिरोही प्रजामण्डल (बम्बई) | 1934 | वृद्धिकर त्रिवेदी | भंवरलाल सरांफ | रामेश्वर दयाल, समर्थमल, भीमशंकर |
| | सिरोही प्रजामण्डल | 1939 | गोकुल भाई. | गोकुल भाई. | धर्मचन्द्र सुराणा, रामेश्वरदयाल, रूपराज, जीवनमल, घासीलाल चौधरी, पूनमचन्द |
| 6. | बीकानेर राज्य प्रजामण्डल (कलकत्ता) | 1936 | मघाराम वैद्य | मघाराम वैद्य | लक्ष्मणदास स्वामी एवं अन्य राजस्थानी प्रवासी |
| | बीकानेर प्रजामंडल | 1936 | मघाराम वैद्य | मघाराम वैद्य | लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक |
| | बीकानेर राज्य परिषद् | 1942 | रघुवरदयाल गोयल | रघुवरदयाल गोयल | लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल,बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक |
| 7. | कोटा प्रजामण्डल | 1939 | पं. नयनूराम शर्मा | पं. नयनूराम शर्मा | पं. अभिन्न हरि, तनसुखलाल मित्तल, शंभूदयाल सक्सेना, बेनी माधव प्रसाद |
| 8. | मारवाड़ लोक | 1938 | जयनारायण व्यास | रणछोड़दास | आनन्दराज सुराणा और भंवरलाल |
| 9. | मेवाड़ प्रजामण्डल | 1938 | माणिक्यलाल वर्मा | बलवंत सिंह मेहता | माणिक्य लाल वर्मा, भूरेलाल बयां, भवानी शंकर वैद्य, |

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | जमनालाल वैद्य. परसराम, दयाशंकर श्रोत्रिय |
| 10. | अलवर प्रजामण्डल | 1938 | पं. हरि नारायण शर्मा | पं. हरि नारायण शर्मा | कुंजबिहारी मोदी, लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, इन्द्रसिंह आजाद, नत्थू राम मोदी, मंगलसिंह |
| 11. | भरतपुर प्रजामण्डल | 1938 | किशनलाल जोशी | गोपीलाल यादव | रेवती शरण शर्मा, मा. आदित्येन्द्र, ठा. देशराज, मोतीलाल यादव, लच्छीराम, मुहम्मद अली, कुंज बिहारी मोदी, रमेश स्वामी, जुगल किशोर चतुर्वेदी |
| 12. | शाहपुरा प्रजामण्डल | 1938 | रमेशचन्द्र ओझा | रमेशचन्द्र ओझा | लादूराम व्यास, अभयसिंह, गोकुललाल असावा, लक्ष्मीकांत कोटिया, अभयसिंह डांगी |
| 13. | धौलपुर प्रजामण्डल | 1938 | ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु | कृष्ण दत्त पालीवाल | जौहरी लाल इन्दु, मूलचन्द, केश्वदेव,केदारनाथ |
| 14. | करौली प्रजामण्डल | 1938 | त्रिलोकचन्द्र माथुर | त्रिलोकचन्द्र माथुर | चिरंजीलाल शर्मा, कुंवर मदन सिंह |
| 15. | किशनगढ़ | 1939 | कांतिलाल चौथानी | कांतिलाल चौथानी | जमालशाह |
| 16. | जैसलमेर राज्य प्रज्ञा परिषद (जोधपुर ) | 1939 | शिव शंकर गोपा | शिव शंकर गोपा | मदनलाल पुरोहित, ललिषद जोशी, जीवनलाल कोठारी, जीतूमल तथा मोहनलाल |
| | जैसलमेर राज्य प्रजामण्डल | 1945 | मीठालाल व्यास | मीठालाल व्यास | मीठालाल व्यास एवं अन्य साथी |
| 17. | कुशलगढ़ प्रजामण्डल | 1942 | भंवरलाल निगम | कन्हैयालाल सेठिया | पन्नालाल त्रिवेदी एवं अन्य साथी |
| 18. | डूंगरपुर प्रजामण्डल | 1944 | भोगीलाल पण्ड्या | भोगीलाल पण्ड्या | शिवलाल कोटड़िया, हरिदेव जोशी, गौरीशंकर उपाध्याय |
| 19. | बूँदी राज्य लोक परिषद | 1944 | मेहता | हरिमोहन माथुर | नित्यानन्द नागर, गोपाल कोटिया, गोपाललाल जोशी, मोतीलाल अग्रवाल,पूनमचन्द |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 20. | बाँसवाड़ा प्रजामण्डल | 1945 | भूपेन्द्र त्रिवेदी | भूपेन्द्र त्रिवेदी | धूलजी भाई., मणिशंकर, चिमनलाल, मोतीलाल, लक्ष्मणदास |
| 21. | प्रतापगढ़ प्रजामण्डल | 1945 | अमृतलाल पायक | अमृतलाल पायक | चुन्नीलाल प्रभाकर एवं अन्य साथी |
| 22. | झालावाड़ प्रजामण्डल | 1946 | मांगीलाल | मांगीलाल | कन्हैया लाल मित्तल, मकबूल आलम और तनसुखलाल, रामनिवास शर्मा मदनगोपाल, रतनलाल, |

होता था। इसके संस्थापक जयनारायण व्यास थें।

**राज्य की सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाएं**

| संस्था का नाम | स्थापना | स्थान | संस्थापक |
|---|---|---|---|
| देश हितैषणी सभा | 1877 | उदयपुर | महाराणा सज्जनसिंह (अध्यक्ष) |
| परोपकारी सभा | 1883 | उदयपुर | महाराणा सज्जनसिंह (अध्यक्ष) |
| राजपुत्र हितकारिणी सभा | 1888 | अजमेर | ए. जी. जी. कर्नल वाल्टर |
| सर्वहितकारिणी सभा | 1907 | चूरू | स्वामी गोपालदास |
| मित्र-मण्डल | | बिजौलिया | साधु सीताराम दास |
| वीर भारत सभा | 1910 | | केसरीसिंह बारहठ |
| विद्या प्रचारिणी सभा | | बिजौलिया | साधु सीताराम दास |
| प्रताप सभा | 1915 | उदयपुर | |
| हिन्दी साहित्य समिति | 1912 | भरतपुर | जगन्नाथ दास |
| प्रजा प्रतिनिधि सभा | 1918 | कोटा | पं. नयनूराम शर्मा |
| मरुधर मित्र हितकारिणी सभा | 1918 | जौधपुर | चांदमल सुराणा |
| राजपुताना मध्य भारत सभा | 1918 | दिल्ली | अध्यक्ष- जमनालाल बजाज |
| राजस्थान सेवा संघ | 1919 | वर्धा | विजयसिंह पथिक |
| मारवाड़ सेवा संघ | 1920 | जोधपुर | जयनारायण व्यास, अध्यक्ष दुर्गाशंकर |
| अमर सेवा समिति | 1922 | चिड़ावा | मा. प्यारेलाल गुप्ता |
| मारवाड़ हितकारिणी सभा | 1923. | जोधपुर | जयनारायण व्यास |
| चरखा संघ | 1927 | जयपुर | जमनालाल बजाज |

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

**नोट** – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

**संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083**

## प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 (cut off- 64) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 30 नवम्बर | 66 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 01 दिसम्बर | 65 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 13 सितम्बर | 113 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट) | 79 (150 में से) |

| | | |
|---|---|---|
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 95 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 56 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |

## & Many More Exams

**दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –**

**RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s**

**VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s**

**Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s**

**अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

| | |
|---|---|
| ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE | Website- https://bit.ly/high-court-ldc |
| PHONE NUMBER | +918233195718<br>+918504091672<br>9694804063<br>01414045784, |
| TELEGRAM CHANNEL | https://t.me/infusion_notes |
| FACEBOOK PAGE | https://www.facebook.com/infusion.notes |
| WHATSAPP करें ➡ | https://wa.link/2vgzg6 |

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

## अध्याय – 15

## राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व

- ### प्रमुख व्यक्ति

- विश्व में प्रत्येक कालखंड में ऐसे व्यक्तियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने कार्यों से समाज को एक नई राह दिखाई है।
- जिन्होंने अपने व्यक्तित्व तथा अपने कार्यों से समाज को ही नहीं दिखाई अपितु देश को भी नई राह दिखाने की कोशिश की और अपने राज्यों, कुटुंब व अपने माता-पिता का नाम रोशन किया।
- ऐसे ही कुछ व्यक्तियों का विवरण नीचे दिया जा रहा है जिन्होंने राजस्थान का नाम इस देश में ही नहीं बल्कि संसार में भी रोशन किया है।

**हीरालाल शास्त्री**
हीरालाल शास्त्री का जन्म 24 नवंबर 1899 में जयपुर जिले के जोबनेर गाँव में हुआ था | जयपुर वनस्थली विद्यापीठ नामक महिला शिक्षण संस्थान के संस्थापक तथा उनकी पत्नी श्रीमती रतन शास्त्री वनस्थली विद्यापीठ की संचालिका थी | भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के प्रधानमंत्री तथा 30 मार्च 1949 को वृद्ध राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री बने थे | टोंक जिले के निवाई तहसील के वनस्थली ग्राम में स्थित जीवन कुटीर (शान्ताबाई शिक्षा कुटीर संस्थान ) नामक संस्था के संस्थापक थे | शास्त्री जी 1958 से 62 तक सवाई माधोपुर के लोकसभा सदस्य रहे तथा 28 दिसंबर 1974 को निधन हो गया | ये प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र नामक पुस्तक के रचयिता थे | प्रशिक्षण नमो नमो नमः गीत लिखा जो बहुत लोकप्रिय हुआ | 1942 में हीरालाल शास्त्री व जयपुर के प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल के मध्य समझौता हुआ जिसे जेन्टलमेन एग्रीमेन्ट कहा गया | 1938 में प्रजामण्डल का पहला अधिवेशन जयपुर में हुआ तथा इस प्रजामण्डल का अध्यक्ष सेठ जमनालाल बजाज को बनाया गया था|

**मोतीलाल तेजावत**
मोतीलाल तेजावत का जन्म 16 मई 1887 को उदयपुर के कोल्यारी गाँव में हुआ | इन्हें आदिवासियों का मसीहा के रूप में जाना जाता है | मोतीलाल तेजावत ने 1921 में चित्तौड़गढ़ स्थित मातृकुण्डियाँ नामक स्थान पर एकी आंदोलन चलाया | तेजावत के नेतृत्व में आदिवासियों ने 21 सूत्री मांगों को लेकर उदयपुर में धरना दिया अन्तः महाराणा ने इनकी 18 मांगे मान ली, मगर तीन प्रमुख मांगे जंगल से लकड़ी काटने, बीड में से घास काटने तथा सूअर मारने से सम्बन्धित थी, नहीं मानी | उदयपुर व चित्तौड़गढ़ जिलों से लोकसभा सदस्य रहे तथा राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे | तेजावत जी दिसंबर 1963 को स्वर्ग सिधार गए|

**भोगीलाल पांडया**
“वागड़ के गांधी” नाम से लोकप्रिय भोगीलाल पंड्या का जन्म आदिवासी जिला डूंगरपुर के सीमलवाड़ा ग्राम में 13 नवंबर, सन 1904 को हुआ। इन्होंने आदिवासी समाज में आत्म स्वाभिमान, शिक्षा का प्रकाश, कुप्रथाओं से छुटकारा और जागरूकता का दीप प्रज्वलित किया। 15 मार्च, 1938 को डूंगरपुर में “वनवासी सेवा संघ” की स्थापना की। 1 अगस्त, 1944 को डूंगरपुर में प्रजामंडल की स्थापना की। 1976 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से नवाजा गया |
इनका उद्देश्य डूंगरपुर रियासत में महारावल की छत्रछाया में उत्तरदाई शासन की स्थापना करना था। 31 मार्च, 1981 को इनकी मृत्यु हुई।

**गोकुल भाई भट्ट**
इनका जन्म 19 फरबरी 1898 ई. में सिरोही जिले के हाथल गाँव में हुआ था | इन्हें राजस्थान का गांधी भी कहा जाता है | इन्होंने सिरोही प्रजामंडल की स्थापना 23 जनवरी 1939 में की | गोकुलभाई भट्ट को वर्ष 1971 में भारत सरकार द्वारा देश के तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान ‘पद्म भूषण’ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तथा वर्ष 1982 को उन्हें ‘जमनालाल बजाज’ पुरस्कार से भी नवाजा गया। इनकी मृत्यु 6 अक्टूबर 1986 को हुई |

**मोहनलाल सुखाड़िया**
इनका जन्म 31 जुलाई 1916 को झालावाढ़ जिले में हुआ था | राजस्थान के निर्माता मोहनलाल सुखाड़िया 13 नवंबर 1954 को राजस्थान के 5 वें मुख्यमंत्री बने तथा 17 वर्ष तक राजस्थान में शासन किया | राजस्थान में सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री बने रहने का गौरव प्राप्त है, इन्होंने इंदुबाला के साथ अंतरजातीय विवाह करके मेवाड़ में रहते थे | सामाजिक जीवन में क्रांति लाई राजस्थान में जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन में इनकी भूमिका सर्वप्रथम राजस्व मंत्री के रूप में तथा तत्पश्चात मुख्यमंत्री के रूप में महत्वपूर्ण रही, राजस्थान में मुख्यमंत्री के पश्चात् वे दक्षिण भारत के 3 राज्यों कर्नाटक, आंध्र प्रदेश व तमिलनाडु के राज्यपाल रहे |

- 1951 में कुलिश ने पत्रकार जीवन की शुरुआत की और 7 मार्च, 1956 को सांध्यकालीन दैनिक के रूप में राजस्थान पत्रिका की शुरुआत की।
- आपातकाल (1975 ई.) के समय इन्होंने राजस्थान के गाँवों की यात्रा की और ग्रामीण जनजीवन व सामाजिक व्यवस्था पर 'मैं देखता चला गया'
- श्रृंखला लिखी जो राजस्थान के ग्रामीण परिवेश का प्रामाणिक दस्तावेज मानी जाती है।
- कुलिश ने पोलमपोल नाम से ढूंढाड़ी में नियमित कॉलम लिखा जो उनकी साहित्यिक वसीयत मानी जाती है।

- **डॉ. पी. के. सेठी :-**
  - जयपुर फुट के जनक डॉ पी. के. सेठी ने सवाई मानसिंह चिकित्सालय में कार्यरत रामचन्द्र के सहयोग से 1969 ई. में दिव्यांगों के लिए नकली पैर (जयपुर फुट) विकसित किया।
  - इस कार्य के लिए इन्हें रैमन मैग्सेसे अवार्ड, डॉ. वी. सी. राय सम्मान, पद्मश्री सम्मान तथा रोटरी इंटरनेशनल अवार्ड फॉर वर्ल्ड अण्डर स्टेण्डिग एण्ड पीस पुरस्कार प्राप्त हुए।

## राजस्थान इतिहास की प्रसिद्ध महिला व्यक्तित्व

### अंजना देवी चौधरी

अंजना देवी चौधरी का जन्म सीकर जिले के श्रीमाधोपुर में हुआ। राजस्थान सेवा संघ के कार्यकर्ता रामनारायण चौधरी से इनका विवाह हुआ। अंजना देवी ने बिजौलिया तथा बेगूं किसान आंदोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया। 1921-24 में मेवाड़, बूंदी राज्यों की स्त्रियों में राष्ट्रीयता, समाज सुधार की भावना को बढ़ावा दिया। 1924 ई. में बिजौलिया में लगभग 500 स्त्रियों के जत्थे (दल) का नेतृत्व करके से किसानों को छुड़या | यह राजस्थान में पहली भारतीय कांग्रेस नेता थी, जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार किया था | इन्हें बूंदी राज्य से निर्वासित भी होना पड़ा। 1934-36 ई. तक अजमेर के नारेली आश्रम में रह कर हरिजन सेवा कार्यों में भाग लिया था ।

### रतन शास्त्री

रतन व्यास का जन्म खाचरोद मध्य प्रदेश में हुआ। इनके पिता का नाम रघुनाथ जी व्यास था | इनका विवाह हीरालाल शास्त्री से हुआ। रतन शास्त्री ने सन् 1939 ई. में जयपुर राज्य प्रजामण्डल के सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और सन् 1942 ई. के भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों की सेवा की। सन् 1955 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1975 ई. में पद्म विभुषण से सम्मानित राजस्थान की प्रथम महिला बनी।

### नगेन्द्रबाला

नगेन्द्रबाला केसरीसिंह बारहठ की पोत्री थी। 1941-1947 ई. तक किसान आंदोलन में सक्रिय रही। स्वतंत्रता के पश्चात् ये कोटा की जिला प्रमुख रहीं। इन्हें राजस्थान की प्रथम महिला जिला प्रमुख होने का गौरव प्राप्त है। ये राजस्थान विधानसभा की सदस्य भी रही हैं।

### जानकी देवी बजाज

जानकी देवी का जन्म मध्यप्रदेश के जावरा कस्बे में हुआ। इनका विवाह जमनालाल बजाज के साथ हुआ और इन्हें वर्धा में आना पड़ा। बजाज जी के देहान्त के बाद इनको गौसेवा संघ की अध्यक्ष बनाया गया। ये जयपुर प्रजामण्डल के 1944 ई. के अधिवेशन की अध्यक्ष चुनी गई। विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के दौरान 108 कुओं का निर्माण करवाया। 1956 ई. में सरकार ने इन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया।

### नारायणी देवी वर्मा

नारायणी देवी का जन्म मध्य प्रदेश के सिंगोली कस्बे में हुआ था । इनके पिता रामसहाय भटनागर थे | इनका विवाह श्री माणिक्यलाल वर्मा से हुआ। बिजौलिया किसान आंदोलन के समय इन्हें कुम्भलगढ़ के किले में बन्दी बना लिया गया। नवम्बर 1944 ई. में महिला शिक्षा तथा जागृति के लिए भीलवाड़ा में महिला आश्रम नाम की संस्था स्थापित कर महिलाओं के सर्वांगीण विकास का कार्य अपने हाथ में लिया। 1952-53 में माणिक्य लाल वर्मा के साथ मिलकर आदिवासी कन्या छात्रावास की स्थापना की | 1970 में राज्यसभा से निर्वाचित किया गया।

### शांता त्रिवेदी

शांता देवी का जन्म नागपुर (महाराष्ट्र) में हुआ था। इनका विवाह उदयपुर के परसराम त्रिवेदी के साथ हुआ। शांता त्रिवेदी ने 1947 ई. में उदयपुर में राजस्थान महिला परिषद् की स्थापना की ताकि महिलाओं का समुचित विकास हो सके | और यह उदयपुर नगर परिषद और नगर निगम की निर्वाचित सदस्य रही।

## मिस लुटर

मिस लूटर का पूरा नाम लिलियन गोडाफ्रेडा डामीश्रोन लूटर था। इनका जन्म क्यामो, बर्मा में हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय ये भारत आ गयी। उन्हीं दिनों जयपुर की महारानी गायत्री देवी ने राजपूत घराने की लड़कियों की शिक्षा के लिए एक स्कूल शुरु किया। मिस लूटर को 1934 ई. में महारानी गायत्री देवी को स्कूल में प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया। वे जीवन पर्यन्त इस पद पर रही। महिला जगत में शिक्षा के प्रसार के लिए भारत सरकार ने 1970 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। 1976 ई. में ब्रिटिश सरकार ने भी महिला शिक्षा के लिए सम्मानित किया ।

## कालीबाई

डूंगरपुर जिले के रास्तापाल गांव की भील कन्या कालीबाई अपने शिक्षक सेंगाभाई को बचाने के प्रयास में पुलिस द्वारा गोलियों से छलनी कर दी गई। इनकी मृत्यु 20 जून, 1947 हुई। रास्तापाल में इनकी स्मृति में एक स्मारक बना हुआ है।

## किशोरी देवी

महिलाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार करने वालों के विरोध में सीकर जिले के कटराथल नामक स्थान पर किशोरी देवी की अध्यक्षता में एक विशाल महिला सम्मेलन 1934 ई. में आयोजित किया गया। जिसमें क्षेत्र की लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया। किशोरी देवी स्वतंत्रता सेनानी सरदार हरलाल सिंह खर्रा की पत्नी थी।

## श्रीमती सत्यभामा

बूंदी के स्वतंत्रता सेनानी नित्यानन्द नागर की पुत्रवधू सत्यभामा ने ब्यावर अजमेर आंदोलन (1932 ई) का नेतृत्व किया। सत्यभामा को गांधी जी की मानस पुत्री के रूप में भी जाना जाता है।

## कमला देवी

इनको राजस्थान की प्रथम महिला पत्रकार के रूप में जाना जाता है। इन्होंने अजमेर से प्रकाशित होने वाले प्रकाश पत्र से लेखन कार्य किया।

## खेतूबाई

बीकानेर के स्वतंत्रता सेनानी वैद्य मघाराम की बहन जिन्होंने दूधवा खारा (चुरु)किसान आंदोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया और आजीवन खादी धारण करने का प्रण लिया।

## रमा देवी

इनका जन्म जयपुर में गंगासहाय के घर में हुआ। ये मात्र 11 वर्ष की आयु में विधवा हो गई। बाद में गांधी विचारधारा रखने वाले नेता लादूराम जोशी से पुनर्विवाह हुआ। विवाह के बाद इन्होंने खादी पहनना प्रारम्भ किया तथा नौकरी छोड़ पति के साथ राजस्थान सेवा संघ का कार्य किया। 1931 ई. में बिजोलिया किसान आंदोलन में भाग लिया ।

## लक्ष्मीदेवी आचार्य

कलकत्ता में स्थापित बीकानेर प्रजामण्डल की संस्थापक सदस्या और अध्यक्ष भी रही। सविनय अवज्ञा आंदोलन और स्वदेशी आंदोलन में भाग लिया।

## पन्नाधाय

पन्नाधाय मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह की धाय मां थी। मेवाड़ के सामन्त बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर युवराज उदयसिंह की हत्या का भी प्रयास किया। पन्नधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदयसिंह को किले से बाहर भेजकर उसकी प्राण रक्षा की।

## गोरां धाय

गोरां धाय ने जोधपुर के अजीतसिंह को औरंगजेब से बचाने के लिए अपने पुत्र का बलिदान देने के कारण इन्हें मारवाड़ की पन्ना धाय भी कहा जाता है।

## हाड़ी रानी (सहल कंवर)

सलूम्बर (मेवाड़) के जागीरदार रतनसिंह चूंडावत की पत्नी जिसने अपना सिर काटकर निशानी के रूप में युद्ध में जाते हुए पति को दे दिया था ।

## रानी पद्मिनी

रानी पद्मिनी चित्तौड़ की रानी थी, जिन्हें पद्मावति के नाम से जाना जाता है जिनके पति रतन सिंह थे। इनकी साहस और बलिदान की गौरवगाथा की मिसाल आज भी राजस्थान में दी जाती है। ऐसा कहा जाता है कि जब खिलजी वंश का क्रूर शासक अलाउद्दीन

# कला संस्कृति

## अध्याय – 1

## राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ

### राजस्थान के लोक देवता

#### (1) गोगाजी चौहान

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता गोगाजी राठौर का वर्णन-
पंच पीरों में सर्वाधिक प्रमुख स्थान।
जन्म - संवत् 1003 में, जन्म स्थान - ददरेवा (चूरू)।
ये चौहान वंश के थे
पिता - जेवरजी चौहान, माता - बाछल दे,
पत्नी - कोलुमण्ड (फलौदी, जोधपुर) की राजकुमारी केलमदे (मेनलदे)।

- केलमदे की मृत्यु साँप के कांटने से हुई जिससे क्रोधित होकर गोगाजी ने अग्नि अनुष्ठान किया। जिसमें कई साँप जलकर भस्म हो गये फिर साँपों के मुखिया ने आकर उनके अनुष्ठान को रोककर केलमदे को जीवित करते हैं। तभी से गोगाजी नागों के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- गोगाजी का अपने मौसेरे भाईयों अर्जन व सुर्जन के साथ जमीन जायदाद को लेकर झगड़ा था। अर्जन - सुर्जन ने मुस्लिम आक्रान्ताओं (महमूद गजनवी) की मदद से गोगाजी पर आक्रमण कर दिया। गोगाजी वीरतापूर्वक लड़कर शहीद हुए।
- युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा इसलिए इसे शीर्ष मेडी (शीषमेडी) तथा धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा इसलिए इसे धड़मेड़ी / धुरमेड़ी / गोगामेड़ी भी कहते हैं।
- बिना सिर के ही गोगाजी को युद्ध करते हुए देखकर महमूद गजनवी ने गोगाजी को जाहिर पीर (प्रत्यक्ष पीर) कहा।
- उत्तर प्रदेश में गोगाजी को जहर उतारने के कारण जहर पीर/जाहर पीर भी कहते हैं।
- गोगामेड़ी का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया। गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर बिस्मिल्लाह लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है। गोगामेड़ी का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन है। प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्णा नवमी) को गोगाजी की याद में गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में भव्य मेला भरता है।
- गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु सांकल नृत्य करते हैं।
- गोगामेड़ी में एक हिन्दू व एक मुस्लिम पुजारी है।
- प्रतीक चिह्न - सर्प।
- खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी का निवास स्थान माना जाता है।
- गोगाजी की ध्वजा सबसे बड़ी ध्वजा मानी जाती है।
- 'गोगाजी की ओल्डी' नाम से प्रसिद्ध गोगाजी का अन्य पूजा स्थल - साँचौर (जालौर)।
- गोगाजी से सम्बन्धित वाद्य यंत्र - डेरू।
- किसान वर्षा के बाद खेत जोतने से पहले हल व बैल को गोगाजी के नाम की राखी गोगा राखड़ी बांधते हैं।
- सवारी - नीली घोड़ी।
- गोगा बाप्पा नाम से भी प्रसिद्ध है।

#### (2) पाबूजी राठौड़ -

जन्म - 1239 ई. में, जन्म स्थान - कोलुमण्ड गाँव (फलौदी, जोधपुर) में हुआ ।
पिता - धाँधल जी राठौड़, माता - कमलादे,
पत्नी - फूलमदे/ सुपियार दे सोढ़ी।

- फूलमदे अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री थी।
- पाबूजी की घोड़ी- केसर कालमी (यह काले रंग की घोड़ी उन्हें देवल चारणी ने दी, जो जायल नागौर के काछेला चारण की पत्नी थी)।
- सन् 1276 ई. में जोधपुर के देचू गाँव में देवलचारणी की गायों को जींद राव खींची से छुड़ाते हुए पाबूजी वीर गति को प्राप्त हुए, पाबूजी की पत्नी उनके वस्त्रों के साथ सती हुई। इस युद्ध में पाबूजी के भाई बूड़ोजी भी शहीद हुए।
- पाबूजी के भतीजे व बूड़ोजी के पुत्र रूपनाथ जी ने जींदराव खींची को मारकर अपने पिता व चाचा की मृत्यु का बदला लिया। रूपनाथ जी को भी लोकदेवता के रूप में पूजते हैं। राजस्थान में रूपनाथ जी के प्रमुख मंदिर कोलुमण्ड (फलौदी, जोधपुर) तथा सिम्भूदड़ा (नोखा मण्डी, बीकानेर) में हैं। हिमाचल प्रदेश में रूपनाथ जी को बालकनाथ नाम से भी जाना जाता है।
- पाबूजी की फड़ नायक जाति के भील भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।

। मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सका ।

**जमुवायमाता -**

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी । इनका मंदिर जमुवा रामगढ़, जयपुर में है। इस मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

**आईजी माता -**

- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी है । इनका मंदिर बिलाड़ा गाँव (जोधपुर) में है। इनके मंदिर को 'दरगाह' व थान को 'बड़ेर' कहा जाता है। ये रामदेवजी की शिष्या थी। इन्हें मानी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती तथा जलने वाले दीपक की ज्योति से केसर टपकती रहती है । इनके मन्दिर का पूजारी दीवान कहलाताहै ।

**राणी सती -**

- वास्तविक नाम 'नारायणी'। 'दादीजी' के नाम से लोक प्रिय। झुंझुनू में हर वर्ष भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है ।
- इनके पति का नाम – तन धनदास

**नोट-**

- इन्होंने हिसार में मुस्लिम सैनिकों को मारकर अपने पति की मृत्यु का बदला लिया और स्वयं सती हो गयी ।
- अग्रवाल समाज की कुलदेवी।
- राज्य सरकार ने 1988 में इस मेले पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि 1987 में देवराला (सीकर) में "रूपकंवर" नामक राजपूत महिला सती हो गयी थी।

**आवड़ माता -**

- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुलदेवी । इनका मंदिर तेमड़ी पर्वत (जैसलमेर) पर है।
- जैसलमेर के तेमड़ी पर्वत पर एक साथ सात कन्याओं को देवियों के रूप में पूजा जाता है ।

**स्वांगिया जी माता-**

- राज चिन्हों में सबसे ऊपर पालम चिड़िया, जिसे शकुल चिड़ी भी कहते है | यह देवी का प्रतीक है
  - सुगन चिड़ी को आवड़ माता का स्वरूप माना जाता है।

**शीतला माता-**

- इन्हें चेचक की देवी, सेढ़ल माता, बोदरी देवी, बच्चों की संरक्षिका आदि नामो से भी जाना जाता है |
- जांटी (खेजड़ी) को शीतला मानकर पूजा की जाती है ।
- शीतला माता का मंदिर **चाकसू गांव (जयपुर) में शील की डूंगरी पर** स्थित है। तथा इस मंदिर का निर्माण महाराजा श्री माधोसिंह द्वितीय जी ने करवाया था।
- इस मंदिर में चेत्र कृष्णा अष्टमी (शीतलाष्टमी) को वार्षिक पूजा व विशाल मेला भरता है। इस दिन लोग बास्योड़ा मनाते हैं।
- इनकी पूजा खंडित प्रतिमा के रूप में की जाती है तथा पुजारी कुम्हार होते हैं।
- इनकी सवारी 'गधा' है।
- इसे सैढल माता या महामाई भी कहा जाता है।
- शीतलाष्टमी को लोग बास्योड़ा (रात का बनाया ठण्डा भोजन) खाते हैं।
- शीतला माता एकमात्र देवी है जो खण्डित रूप में पूजी जाती है।

**सुगाली माता -**

- आऊवा (पाली) के ठाकुर कुशाल सिंह चंपावत की ईष्ट देवी है। इस देवी की प्रतिमा के दस सिर और चौपन हाथ है।
- इन्हें 1857 की क्रान्ति की देवी माना जाता है।
- सुगाली माता की मूर्ति वर्तमान में पाली के बागड़ संग्रहालय में रखी गई है, इससे पहले यह अजमेर के राजपूताना म्यूजियम में थी।

**नकटी माता -**

- जयपुर के निकट जयभ वानी पुरा में 'नकटी माता' का प्रतिहार कालीन मंदिर है ।

**ब्राह्मणी माता –**

- बाराँ जिले के अंता कस्बे से 20 किमी. दूर सोरसन ग्राम के पास ब्राह्मणी माता का विशाल प्राचीन मंदिर है।
- विश्व में संभवतः यह अकेला मंदिर है जहाँ देवी की पीठ की ही पूजा होती है अग्र भाग की नहीं। यहाँ माघ शुक्ला सप्तमी को गधों का मेला भी लगता है।

**जिलाणी माता –**

- जिलाणी माता का मंदिर अलवर जिले के बहरोड़ कस्बे की प्राचीन बावड़ी के समीप स्थित है ।

**नोट** – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद।

**संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083**

## प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 (cut off- 64) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 30 नवम्बर | 66 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 01 दिसम्बर | 65 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 13 सितम्बर | 113 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट) | 79 (150 में से) |

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

| | | |
|---|---|---|
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 95 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 56 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |

## & Many More Exams

**दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –**

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

**अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।**

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

| | |
|---|---|
| ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE | Website- https://bit.ly/high-court-ldc |
| PHONE NUMBER | +918233195718<br>+918504091672<br>9694804063<br>01414045784, |
| TELEGRAM CHANNEL | https://t.me/infusion_notes |
| FACEBOOK PAGE | https://www.facebook.com/infusion.notes |
| WHATSAPP करें | https://wa.link/2vgzg6 |

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

# अध्याय – 5

# राज्य की चित्रकला

## राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण

राजस्थानी चित्रशैली का सबसे पहला वैज्ञानिक विभाजन 1916 ई. में श्री आनंद कुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक 'राजपूत पेंटिग्स में किया। राजस्थानी चित्रकला की शैलियों को भौगोलिक, सांस्कृतिक आधार पर चार प्रमुख स्कूलों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

## मेवाड़ शैली

राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभ जैन, अपभ्रंश, मालव आदि कलाओं के सामंजस्य से माना जाता है। राजस्थानी चित्रशैली की मूल शैली मेवाड़ चित्रशैली को माना जाता है। मेवाड़ स्कूल में चित्रकला को विकसित करने का श्रेय 'महाराणा कुंभा' को जाता है। मेवाड़ चित्र शैली का प्रथम चित्रित ग्रंथ 1260 ई. का 'श्रावक-प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' को माना जाता है द्वितीय चित्रित ग्रंथ' सुपासनाहचरित' है जिसमें स्वर्ण चूर्ण का प्रयोग किया गया। राजस्थानी चित्रकला के मेवाड़ स्कूल को विद्वानों द्वारा चार शैलियों में विभाजित किया गया है-

## उदयपुर ( मेवाड़) उपशैली

1. जगत सिंह प्रथम के शासन काल को मेवाड़ चित्रकल काल स्वर्ण काल कहा जाता हैं।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ महाराणा तेजसिंह के काल में रचित 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि एवं सुपासनाहचरित', गीत गोविंद आख्यायिका, 'रामायण शूकर' आदि है।
3. प्रमुख चित्रकार साहिबदीन, मनोहर, कृपाराम, उमरा, गंगाराम, भैरोराम, शिवदत्त आदि।
4. इस शैली में पीला एवं लाल रंगों प्रमुख प्रयोग किया गया है।
5. इस शैली में प्रुकुख आकृति व वेशभूषा गठीला शरीर, लम्बी मूंछे, छोटा कद, विशालनयन, सिर पर पगड़ी, कमर में पटका, लंबा घेरदार जामा, कानों में मोती आदि दर्शाया गया हैं।
6. इस शैली में नारी आकृति व वेशभूषा के चित्र मीनाकृत आँखे, गरुड़ सी लंबी नाक, ठिगना कद, लम्बी वेणी, लहंगा एवं पारदर्शक ओढ़नी से बनाये जाते थे।
7. विशेष तथ्य

- महाराणा अमरसिंह प्रथम के समय में मेवाड़ शैली पर मुगल प्रभाव लगा।
- मेवाड़ शैली पर गुर्जर व जैन शैली का सर्वाधिक प्रभाव है।
- मेवाड़ चित्रशैली में बादल युक्त नीला आकाश, कदंब के वृक्ष, हाथी, कोयल, सारस एवं मछलियों का चित्रण अधिक मिलता है।
- महाराणा जगतसिंह प्रथम ने राजमहल में 'चितेरो की ओवरी' नाम से कला विद्यालय स्थापित करवाया जिसे 'तस्वीरां रो कारखानों के नाम से जाना जाता है।

## नाथद्वारा उपशैली

1. नाथद्वारा शैली के प्रमुख शासक महाराणा राजसिंह थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रित ग्रंथ कृष्ण लीला, श्रीनाथ जी के विग्रह, ग्वाल-बाल, गोपियों आदि के चित्र प्रमुखतः मिलते हैं।
3. इस शैली के प्रमुख चित्रकार नारायण, चतुर्भुज, घासीराम, उदयराम, रेवा शंकर एवं कमला तथा इलायची (महिला चित्रकार)।
4. इस शैली में हरा एवं पीलें रंगों का प्रमुख प्रयोग किया गया है।
5. इस शैली में पुरुष आकृति व वेशभूषा पुरुषों में पुष्ट कलेवर, नंद एवं बालगोपालों को भावपूर्ण चित्रण हुआ करता था।
6. इस शैली में नारी आकृति व वेशभूषा छोटा कद, तिरछी एवं चकोर के समान आँखे, शारीरिक स्थूलता एवं भावों में वात्सल्य की झलक बनाई जाती थी।

### विशेष तथ्य-

- इस चित्र शैली में पिछवाई एवं भित्ती चित्रण प्रमख हैं।।
- इस चित्र शैली में गाय, केले के वृक्षों को प्रधानता दी गई है।

## देवगढ़ उपशैली

1. इस शैली का प्रमुख विषय शिकार के दृश्य, राजसी ठाट-बाट, श्रृंगार, प्राकृतिक दृश्य को दर्शाना था।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रकार कँवला, चोखा, बैजनाथ थे।
3. इस शैली में पीले रंग का प्रमुख प्रयोग किया गया हैं।
4. विशेष तथ्य-

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

**नोट**- एकमात्र चित्रशैली जिसमें चित्रकार स्वयं ही चित्र के नीचे शीर्षक लिखता है जैसे-'राम जी झुलों झुलें है।

| **वृक्ष** | **चित्रशैली** |
| --- | --- |
| कदम्ब | उदयपुर (मेवाड़) शैली |
| केला | किशनगढ़ (नाथद्वारा) शैली |
| खजूर | कोटा, बूंदी शैली |
| पीपल, | अलवर, जयपुर शैली |
| आम | जोधपुर, बीकानेर शैली; |

| **आंखों की बनावट** | **चित्र शैली** |
| --- | --- |
| हिरण के समान आंखे | नाथद्वारा शैली |
| खंजर के समान आंखे | किशनगढ़ शैली |
| बादाम के समान आंखे | जोधपुर शैली |
| ऊपर-नीचे के रेखा सामांतर | बूंदी शैली |
| मछली के समान आंखे | उदयपुर, जयपुर शैली |
| कमान के समान आंखे | किशनगढ़ शैली |

| **पशु-पक्षी** | **चित्रशैली** |
| --- | --- |
| कौआ, चील, ऊँट, घोड़े | जोधपुर, बीकानेर शैली |
| हाथी व चकोर | उदयपुर शैली |
| गाय | नाथद्वारा शैली |
| मोर व घोड़ा | जयपुर,अलवर शैली |

| **शैली** | **रंग** |
| --- | --- |
| मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर | पीला |
| नाथद्वारा | पीला-हरा |
| अजमेर | पीला-लाल-हरा-बेंगनी |
| किशनगढ़ | श्वेत, गुलाबी |
| मेवाड़ | पीला-लाल |
| कोटा | पीला-हरा-नीला |
| बूंदी | हरा |
| जयपुर | केसरिया, हरा, लाल |

### चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएं

| **संस्था** | **स्थान** |
| --- | --- |
| चितेरा | जोधपुर |
| धोरां | जोधपुर |
| तूलिका कलाकार परिषद | उदयपुर |
| टखमण -28 | उदयपुर |
| कलावृत | जयपुर |
| पैंग | जयपुर |
| आयाम | जयपुर |
| क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप | जयपुर |
| अंकन | भीलवाड़ा |

### राजस्थानी चित्रकला संग्रहालय

| | |
| --- | --- |
| पोथीखाना | जयपुर |
| पुस्तक प्रकाश | जोधपुर |
| सरस्वती भण्डार | उदयपुर |
| जैन भण्डार | जैसलमेर |
| कोटा संग्रहालय | कोटा |
| अलवर संग्रहालय | अलवर |

### ललित कला अकादमी -जयपुर

- स्थापना 24 नवम्बर 1957
- इस अकादमी का प्रमुख कार्य कलात्मक गतिविधियों का संचालन करना, कला प्रदर्शनियों का आयोजन तथा कलाकारों को फैलोशिप प्रदान करना होता है।
- राजस्थान की दृश्य तथा शिल्प कला की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन।
- राज्य में सांस्कृतिक एकता स्थापित करना।

### राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स- जयपुर

- स्थापना -1857
- जयपुर महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित किया गया तब इसका नाम मदरसा-हुनरी था।
- स्वतंत्रता के बाद इसका नाम राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्डक्राफ्ट्स हो गया।
- वर्तमान में मूर्तिकला तथा चित्रकला से संबंधित डिप्लोमा करवाया जाता है।

### जवाहर कला केन्द्र-जयपुर

- स्थापना- 8 अप्रैल 1993
- उद्घाटन -शंकर दयाल शर्मा (तत्कालीन राष्ट्रपति)
- राजस्थान की समृद्ध कला परम्परा के संवर्धन, लोक मानस में बिखरी सांस्कृतिक विरासत एवं मरुधरा की अनमोल धरोहर के संरक्षण हेतु।
- सुरजीत सिंह चोयल ( जयपुर )राजस्थान की पहली महिला चित्रकार।

***कुरब प्रदान करना***
*दरबार में बैठने हेतु इस प्रकार के कुरब नरेश द्वारा प्रदर्शन किये जाने थे।*

***हाथ का कुरब***
*इस कुरब के तहत नरेश सरदार के बांह से अपना हाथ लगाकर वही हाथ अपने सीने के पास लाता था।*

***बांह पसवा का कुरब***
*इसके अन्तर्गत नरेश सरदार के कन्धे से अपना हाथ लगा देता था ।*

***सिरे बैंसण रौं कुरब***
*सिरे बैंसण रौं कुरब के तहत सरदार राजा के दांये अथवा बांये ओर बैठता था । मेड़तिया राठौड़ नरेश के बांयी और बैठते थे ।*

- ***राजस्थान की प्रमुख प्रथाएं***

- ***सती प्रथा*** *- पति की मृत्यु पर पत्नी द्वारा पति चिता के साथ जलकर मौत का वरण करना ही 'सती प्रथा' कहलाता हैं। इस प्रथा को सहगमन / सहमरणा / अणवारोहण के नाम से भी जाना जाता हैं।*

*राज्य में सर्वप्रथम सती होने का प्रमाण वि.सं. 861 ई. के घटियाला शिलालेख (जोधपुर) से मिलते है, जबकि राज्य में सन् 1987 में सती प्रथा की अंतिम घटना दिवराला गांव (सीकर) को मानी जाती हैं। इस घटना के बाद राजस्थान सरकार ने सती निवारण अधिनियम पारित किया ।*
*- आजादी से पहले राज्य में 1822 ई. में सर्वप्रथम सती प्रथा पर बूंदी रियासत में विष्णुसिंह ने सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित किया गया।*
*- बाद में राजा राममोहनराय के प्रयासों से लॉर्ड विलियम बैंटिक ने सन् 1829 में सती प्रथा को रोकने के लिए सरकारी आदेश जारी किया था । इस आदेश के बाद अलवर रियासत ने सर्वप्रथम सती प्रथा पर रोक लगाई थी । भारत के शासक मुहम्मद तुगलक व अकबर ने भी सती प्रथा पर रोक लगाने के प्रयास किए थे ।*
*राज्य में सबसे प्रसिद्ध सती प्रथा की घटना 1652 ई. में हुई । इसमें झुंझुनू के तन धन दास की पत्नी नारायणी देवी सती हुई थी । नारायणी देवी को रानी सती या सती दादी के नाम से भी जाना जाता हैं । इस परिवार की कुल 13 महिलाएं सती हुई थी ।*

- ***अनुमरण प्रथा*** *- पति के शव के साथ सती न होकर उसके किसी चिन्ह (वस्तु) के साथ सती होना ही 'अनुमरण' कहलाता हैं । ऐसी 'सती' को महासती कहते हैं । मारवाड़ के राजा राव मालदेव की पत्नी उमादे जो कि जैसलमेर के राजा लूणकरण की पुत्री थी । यह उमादे भी मालदेव की पत्नी के साथ सती हुई थी ।*
- ***अणख प्रथा*** *- सती होने वाली महिला अपने परिवार के सदस्यों को कुछ उपदेश दिया करती थी, जिसे ही अणख प्रथा कहा जाता था ।*
- ***जौहर प्रथा*** *- युद्ध में जीत की आशा ना देखकर राजपूत महिलाएं अपने स्त्रीत्व की रक्षा हेतु अग्नि या जल में कूदकर अपनी जान दे देती थी, इसे ही जौहर प्रथा कहते हैं ।*
- ***केसरिया प्रथा*** *- राजपूत योद्धा केसरिया वस्त्र पहनकर युद्ध करते हुए, वीरगति को प्राप्त हो जाते थे, इसे ही केसरिया करना कहते हैं ।*

- ***साका*** *- यदि जौहर और केसरिया किसी युद्ध के समय दोनों होते हैं, तो इसे साका कहते हैं ।*
- ***अर्द्धसाका*** *- यदि किसी युद्ध में केसरिया तो हुआ, लेकिन 'जौहर' नहीं हुआ तो इसे 'अर्द्धसाका' कहते हैं ।*
- ***डावरिया प्रथा*** *- राजाओं की लड़की की शादी में उनके साथ दहेज के रूप में अन्य कुंवारी कन्याएं दी जाती थी, जिसे 'डावरिया' कहा जाता था ।*
- ***नाता प्रथा*** *- पुनर्विवाह को ही नाता प्रथा कहते हैं ।*
- ***कोथला*** *- बेटी के पिता लड़कों वालों को बुलाकर कुछ उपहार देता हैं, इसे ही कोथला कहा जाता हैं ।*
- ***समठुणी*** *- विवाह के उपरांत लड़की के पिता द्वारा बारातियों को विदाई के समय कुछ भेंट प्रदान की जाती हैं । इसे ही समठुणी कहते हैं ।*
- ***त्याग प्रथा*** *- राजकुमारियों के विवाह के अवसर पर राजा या महाराजाओं द्वारा चारण साहित्याकारों को दिया जाने वाला उपहार । इसे ही 'पोलपात बारहठ' कहा जाता हैं । इस पर सर्वप्रथम 1841 ई. में जोधपुर रियासत ने रोक लगाई ।*
- ***कन्यावध*** *- कन्या को जन्म लेते ही उसे अफीम देकर या गला दबाकर मार दिया जाता था, इसे ही कन्या वध कहते हैं । ये प्रथा विशेषकर मारवाड़ के राजपूतों में प्रचलित थी । कन्या वध में सर्वप्रथम रोक 1833 ई. में कोटा रियासत ने लगाया । बाद में बूंदी*

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# हाईकोर्ट LDC की परीक्षा के लिए अन्य महत्वपूर्ण अध्याय

## अध्याय – 1

## राज्यपाल

- भारतीय संविधान के भाग-VI में राज्य शासन के लिए प्रावधान किया गया है । यह प्रावधान पहले जम्मू-कश्मीर को छोड़कर सभी राज्यों के लिए लागू होता था लेकिन अब सभी राज्यों के लिए लागू होता है।
- राज्य में राज्यपाल का उसी प्रकार से स्थान है जिस प्रकार से देश में राष्ट्रपति का (कुछ मामलों को छोड़कर)।
- **अनुच्छेद 153** के तहत प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा। **लेकिन 7वें संविधान संशोधन-1956 द्वारा इसमें एक अन्य प्रावधान जोड़ दिया गया जिसके अनुसार एक ही व्यक्ति दो या दो से अधिक राज्यों के लिए भी राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है।**
- **अनुच्छेद 154** के तहत राज्य की कार्यपालिका का प्रमुख "राज्यपाल" होता है लेकिन **अनुच्छेद 163** के तहत राज्यपाल अपनी स्व-विवेक शक्तियों के अलावा सभी कार्य मंत्रिपरिषद की सलाह पर करता है अर्थात राज्यों में राज्यपाल की स्थिति कार्यपालिका के प्रधान की होती है परंतु वास्तविक शक्ति मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मंत्रिपरिषद में निहित होती है।
- **अनुच्छेद 155** के अनुसार राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है अर्थात् राज्यपाल की नियुक्ति के संदर्भ में राष्ट्रपति अधिपत्र (वारंट) जारी करते है जिसे मुख्य सचिव पढ़कर सुनाता है।
- **राज्यपाल की नियुक्ति का प्रावधान ' कनाडा ' से लिया गया है।**

**संविधान लागू होने से लगाकर वर्तमान तक राज्यपाल की नियुक्ति के संबंध में कुछ परंपराएं बन गई जो निम्न है –**
(i) संबंधित राज्य का निवासी नहीं होना चाहिए ताकि वह स्थानीय राजनीति से मुक्त रहे।
(ii) राज्यपाल की नियुक्ति के समय राष्ट्रपति संबंधित राज्य के मुख्यमंत्री से परामर्श ले ताकि समय दानी की व्यवस्था सुनिश्चित हो

**राज्यपाल की नियुक्ति के संबंध में गठित प्रमुख आयोग व उनकी सिफारिश**

**सरकारिया आयोग**
गठन-1983 रिपोर्ट- 1987 अध्यक्ष- रणजीत सिंह सरकारिया

**सिफारिश –**
- राज्यपाल ऐसे व्यक्ति को बनाया जाना चाहिए जो किसी क्षेत्र विशेष में प्रसिद्ध हो।
- राज्य के बाहर का निवासी होना चाहिए।
- राजनीतिक रूप से तटस्थ व्यक्ति होना चाहिए।
- सक्रिय राजनीती में भागीदारी नहीं ले रहा हो राज्यपाल की नियुक्ति से पूर्व राज्य के मुख्यमंत्री से परामर्श लिया जाए।
- 5 वर्ष की निश्चित पदावली हो।
- राज्यपाल को हटाए जाने से पूर्व एक बार चेतावनी देनी चाहिए अथवा पूर्व सूचना दी जानी चाहिए ।

**द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग**
वर्ष 2005 में वीरप्पा मोइली (कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री) की अध्यक्षता में गठित। वर्ष 2010 में इसने अपना प्रतिवेदन दिया।

**सिफारिश –**
- इस आयोग के अनुसार राज्यपाल की नियुक्ति के संदर्भ में **कॉलेजियम व्यवस्था** होनी चाहिए। प्रधानमंत्री इसका अध्यक्ष होगा जबकि उपराष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष, गृहमंत्री तथा लोकसभा में विपक्ष का नेता इसके सदस्य होंगे लेकिन सुझाव स्वीकार नहीं किया गया था।

**पूंछी आयोग**
गठन-2007 रिपोर्ट- 2010 अध्यक्ष- मदनमोहन पूंछी

**सिफारिश –**
- केंद्र राज्य संबंधों की जांच हेतु गठित पूंछी आयोग ने राज्यपाल को हटाने के लिए विधानमंडल में महाभियोग की प्रक्रिया अपनाने का सुझाव दिया।
- राज्यपाल को किसी भी विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति नहीं बनाना चाहिए।
- राज्य की विधानसभा में पारीत विधेयक पर राज्यपाल को 6 माह में निर्णय लेना चाहिए ।

**राजमन्नार आयोग**
गठन-1969 रिपोर्ट- 1971 अध्यक्ष- डॉ. वी.पी. राजमन्नार

**NOTE- सरकारिया आयोग, राजमन्नार आयोग व पूंछी आयोग का सम्बन्ध राज्यपाल की नियुक्ति और केंद्र-राज्य संबंधो से है ।**

**अनुच्छेद 156** इस अनुच्छेद में राज्यपाल की पदावधि/ कार्यकाल का उल्लेख लिया गया है। अर्थात राज्यपाल अपने पद ग्रहण की तारीख से 5 वर्ष तक पद पर बना रहेगा।

- अशोक गहलोत ऐसे मुख्यमंत्री रहे जिनके कार्यकाल में दो उप-मुख्यमंत्री रहे ( I ) बनवारी लाल बैरवा ( 2 ) कमला बेनीवाल

**उपमुख्यमंत्री**

यह एक गैर - संवैधानिक पद है I यह एक परम्परा के तौर पर किसी राजनीतिक दल को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से सृजित किया जाता है I

| **उपमुख्यमंत्री** | **मुख्यमंत्री** | **वर्ष** |
|---|---|---|
| टीकाराम पालीवाल | जयनारायण व्यास | 1952-1954 |
| हरिशंकर भाभड़ा | भैरोंसिंह शेखावत | 1994-1998 |
| बनवारी लाल बैरवा | अशोक गहलोत | 2003 |
| कमला बेनीवाल | अशोक गहलोत | 2003 |
| सचिन पायलट | अशोक गहलोत | 2018 |

**वसुन्धरा राजे**

- वसुन्धरा राजे 8 दिसम्बर, 2003 को राजस्थान की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनी I
- इसके बाद 13 दिसम्बर, 2013 को उन्हें दूसरी बार प्रदेश का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला I
- यह दो बार राजस्थान की मुख्यमंत्री रही यह पांच बार विधायक व 5 बार लोकसभा सांसद बनी।
- श्रीमती वसुंधरा राजे राजस्थान से सर्वाधिक बार लोकसभा सांसद बनने वाली महिला हैं I
- वसुंधरा राजे राजस्थान विधानसभा में विपक्ष की नेता भी रही है।

  **NOTE- राजस्थान के तीन ऐसे मुख्यमंत्री जो विपक्ष / प्रतिपक्ष के नेता भी रहे :- ( I ) भैरोंसिंह शेखावत ( तीन बार ) ( 2 ) हरिदेव जोशी ( एक बार) (3 ) वसुंधरा राजे (एक बार )**

**राजस्थान के मुख्यमंत्री**

| क्र. | मुख्यमंत्री | कार्यकाल |
|---|---|---|
| 1. | श्री हीरालाल शास्त्री | 07.04.1949 - 05.01.1951 |
| 2. | श्री सी.एस. वैंकटाचार्य | 06.01.1951 - 25.04.1951 |
| 3. | श्री जयनारायण व्यास | 26.04.1951 - 03.03.1952 |
| 4. | श्री टीकाराम पालीवाल | 03.03.1952 - 31.10.1952 |
| 5. | श्री जयनारायणव्यास | 01.11.1952 - 12.11.1954 |
| 6. | श्री मोहनलाल सुखाड़िया | 13.11.1954 - 11.04.1957 |
| 7. | श्री मोहनलाल सुखाड़िया | 11.04.1957 - 11.03.1962 |
| 8. | श्री मोहनलाल सुखाड़िया | 12.03.1962 - 13.03.1967 |
| 9. | राष्ट्रपति शासन | 13.03.1967- 26.04.1967 |
| 10. | श्री मोहनलाल सुखाड़िया | 26.04.1967- 09.07.1971 |
| 11. | श्री बरकतुल्लाखां | 09.07.1971- 11.10.1973 |
| 12. | श्री हरि देव जोशी | 11.10.1973 - 29.04.1977 |
| 13. | राष्ट्रपति शासन | 30.04.1977- 21.06.1977 |
| 14. | श्री भैरोंसिंह शेखावत | 22.06.1977 - 16.02.1980 |
| 15. | राष्ट्रपति शासन | 17.02.1980 - 05.06.1980 |
| 16. | श्री जगन्नाथ पहाडिया | 06.06.1980- 13.07.1981 |
| 17. | श्री शिवचरण माथुर | 14.07.1981- 23.02.1985 |
| 18. | श्री हीरालाल देवपुरा | 23.02.1985 - 10.03.1985 |
| 19. | श्री हरि देव जोशी | 10.03.1985 - 20.01.1988 |

# ***अध्याय – 4***

## ***उच्च न्यायालय***

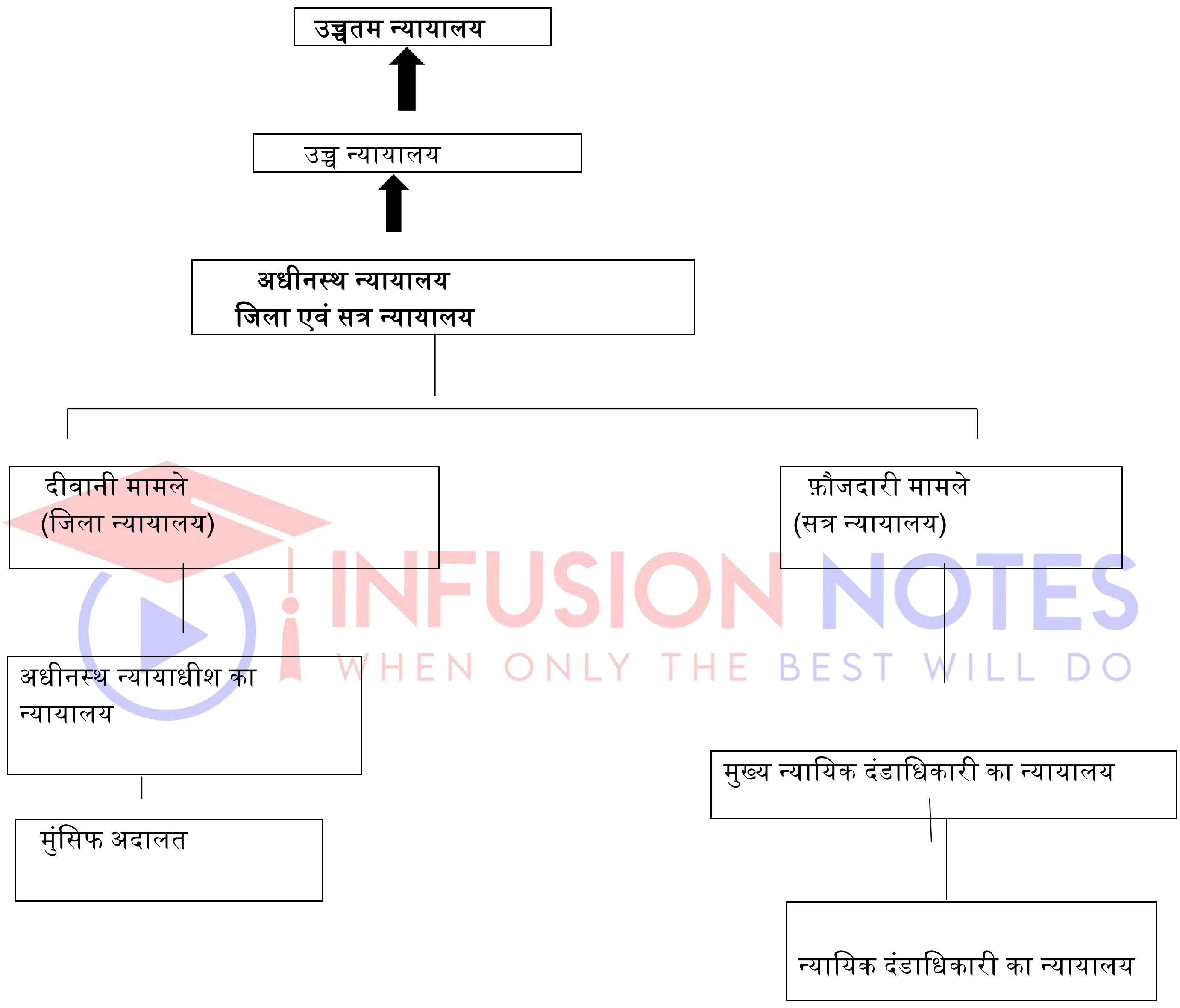


- *भारत में उच्च न्यायालय संस्था का सर्वप्रथम गठन वर्ष 1862 में कलकत्ता , बंबई और मद्रास उच्च न्यायालयों के रूप में हुआ ।*
- *वर्ष 1866 में चौथे उच्च न्यायालय की स्थापना इलाहाबाद ( प्रयागराज ) में हुई ।*
- *भारतीय संविधान के **भाग -6 के अनुच्छेद 214 से लेकर 232 तक** राज्यों के उच्च न्यायालय के संगठन एवं प्राधिकार संबंधी प्रावधानों का वर्णन किया गया है ।*
- ***अनुच्छेद 214** के तहत प्रत्येक राज्य में एक उच्च न्यायालय होगा लेकिन **अनुच्छेद 231** के अन्तर्गत संसद को दो या दो से अधिक राज्यों के लिए एक ही उच्च न्यायालय की*
- *व्यवस्था की शक्ति प्राप्त है । ( 7 वें संविधान 1956 के तहत् )*
- ***अनुच्छेद 230 के तहत्** संसद कानून बनाकर किसी उच्च न्यायालय का विस्तार संघ शासित प्रदेश के लिए कर सकती है ।*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

पहले भारत में 21 उच्च न्यायालय थे । मार्च 2013 में मेघालय , मणिपुर एवं त्रिपुरा में नए उच्च न्यायालय स्थापित किए गए हैं ।

- वर्तमान में 25 उच्च न्यायालय है । 25 वां उच्च न्यायालय आंध्रप्रदेश राज्य का जो 1 जनवरी , 2019 अमरावती में स्थापित हुआ है ।
- केन्द्रशासित प्रदेशों में दिल्ली ऐसा संघ क्षेत्र है जिसका अपना उच्च न्यायालय ( वर्ष1966 से ) है।

**NOTE : -** जम्मू - कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम 2019 के तहत जम्मू - कश्मीर राज्यों को दो केन्द्रशासित प्रदेशों ( जम्मू - कश्मीर व लद्दाख ) में विभाजित कर दिया गया । इससे पूर्व जम्मू कश्मीर राज्य में भी उच्च न्यायालय था लेकिन इस एक्ट के लागू होने के बाद जम्मू - कश्मीर राज्य का उच्च न्यायालय जम्मू - कश्मीर केन्द्रशासित प्रदेश में यथास्थित रहेगा ।

- निम्न संयुक्त उच्च न्यायालय है
  (i) पंजाब , हरियाणा , चंडीगढ़ : - चंडीगढ़ उच्च न्यायालय
  (ii) महाराष्ट्र , गोवा , दमन व दीव , दादर एवं नागर हवेली- बॉम्बे उच्च न्यायालय
  (iii) असम , अरुणाचल प्रदेश , नागालैण्ड , मिजोरम : - गुवाहटी उच्च न्यायालय
  (iv ) तमिलनाडु , पुडुचेरी : - मद्रास उच्च न्यायालय
  (v) केरल , लक्षद्वीप - एर्नाकुलम उच्च न्यायालय
  (vi) प . बंगाल , अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह:- कलकत्ता उच्च न्यायालय

**गठन**

**अनुच्छेद 216** में उच्च न्यायालय के गठन का उल्लेख किया गया है । जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश और अन्य न्यायाधीश होंगे । संविधान में न्यायाधीशों की संख्या निश्चित नहीं है । राष्ट्रपति समय - समय पर आवश्यकतानुसार न्यायाधीशों की संख्या निर्धारित करते हैं ।

**न्यायाधीशों की योग्यता**

- अनुच्छेद 217 (2) के अनुसार कोई व्यक्ति किसी उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त होने के योग्य तब होगा , जब वह
- भारत का नागरिक हो ।
- कम से कम 10वर्ष तक न्यायिक पद धारण कर चुका हो ।या किसी उच्च न्यायालय में एक या से अधिक उच्च न्यायालयों में लगातार 10 वर्ष तक अधिवक्ता रहा हो ।

**न्यायाधीशों की नियुक्त**

- उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है ।
- उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा भारत के मुख्य न्यायाधीश और संबंधित राज्य के राज्यपाल से परामर्श के पश्चात की जाती है ।
- कॉलेजियम की अनुशंसा पर अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है । संबंधित उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा उच्च न्यायालय के 2 वरिष्ठतम न्यायाधीश इस संदर्भ में पहल करते हैं ।
- इनके द्वारा उच्चतम न्यायालय के कॉलेजियम ( भारत का मुख्य न्यायाधीश + 4 वरिष्ठतम न्यायाधीश ) के पास नाम भेजे जाते है । यह कॉलेजियम राष्ट्रपति को इस सन्दर्भ में अनुशंसा करते हैं ।

**NOTE: -** 99 वें संविधान संशोधन अधिनियम 2014 तथा राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग अधिनियम 2014 द्वारा SC एवं HC के न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए कॉलेजियम प्रणाली की जगह राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग ( NJAC ) का गठन किया गया लेकिन SC ने इस संशोधन एवं अधिनियम को असंवैधानिक घोषित कर दिया । वर्तमान में कॉलेजियम व्यवस्था के तहत ही न्यायाधीशों की नियुक्ति होती है ।

**कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति**

- अनुच्छेद 223 के तहत जब किसी उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश का पद रिक्त हो या जब मुख्य न्यायाधीश की अनुपस्थिति के कारण या अन्यथा अपने पद के कर्तव्यों का पालन करने में असमर्थ हो, तब राष्ट्रपति न्यायायल के अन्य न्यायाधीशों में से किसी को मुख्य न्यायाधीश के कार्यों का निर्वहन करने के लिए नियुक्त कर सकता है।

**अनुच्छेद 224 में** अतिरिक्त और कार्यकारी न्यायाधीश का उल्लेख किया गया है ।

**अतिरिक्त का प्रावधान केवल उच्च न्यायालय के लिए हैं । जबकि तदर्थ न्यायाधीश की नियुक्ति उच्च न्यायालय में नहीं की जाती ।**

**मोबाइल अदालत ( Mobile Court )**

- मोबाइल कोर्ट अवधारणा के जनक भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ . ए.पी.जे. अब्दुल कलाम थे ।
- इसे प्राय ' पहियों पर न्याय ' के नाम से जाना जाता है ।
- मोबाइल अदालत एक बस के भीतर कार्य करती है ।
- इसके माध्यम से अदालत स्वयं जनता के पास पहुँचे ताकि जनता को त्वरित व सुलभ न्याय उपलब्ध हो सके तथा उनके समय व धन दोनों की बचत हो । भारत में प्रथम मोबाइल अदालत का प्रयोग वर्ष 2007 में हरियाणा के मेवात जिले में किया गया ।

## राजस्थान उच्च न्यायालय

- राजस्थान उच्च न्यायालय राजस्थान का न्यायालय हैं।
- इसका मुख्यालय जोधपुर मे है।
- यह 29 अगस्त, 1949 को राजस्थान उच्च न्यायालय अध्यादेश, 1949 के अंतर्गत स्थापित किया गया । इसकी एक खण्डपीठ जयपुर में भी स्थित है।
- राजस्थान हाईकोर्ट में न्यायधीशों की संख्या 50 तक हो सकती है।
- उस समत तात्कालिक राजप्रमुख सवाई मानसिंह-II ने न्यायधीश कमलकांत वर्मा को राजस्थान के प्रथम मुख्य न्यायधीश एवं II अन्य न्यायाधीशों को शपथ दिलाई।
- 8 मई , 1952 को राजप्रमुख ने एक अधिसूचना जारी कर निर्देश दिया कि 22 मई , 1952 से राजस्थान के लिए न्यायिक उच्च न्यायालय बीकानेर , कोटा एवं उदयपुर बैंच ( खण्डपीठ ) समाप्त हो गये लेकिन जयपुर खण्डपीठ को काम करने की स्वीकृति प्रदान की गई अर्थात् इसे समाप्त नहीं किया गया ।
- राज्य पुनर्गठन अधिनियम , 1956 के बाद पी . सत्यनारायण राव की अध्यक्षता में गठित समिति की सिफारिश ( 26 फरवरी , 1958 ) पर राजस्थान उच्च न्यायालय की मुख्यपीठ जोधपुर ही रही , लेकिन खण्डपीठ जयपुर को समाप्त कर दिया गया ।
- राज्य पुनर्गठन अधिनियम , 1956 की धारा -51 के तहतत राष्ट्रपति ने राजस्थान उच्च न्यायालय आदेश 1976 जारी किया जिसके तहत 31 जनवरी , 1977 को जयपुर खण्डपीठ पुनः स्थापित की गई ।
- राजस्थान हाईकोर्ट में स्वीकृत न्यायाधीशों की कुल संख्या 50 है ।
- राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश - कमलकांत वर्मा ।
- राजस्थान उच्च न्यायालय के वर्तमान ( 39वें ) मुख्य न्यायाधीश - न्यायमूर्ति एस.एस. सिंदे (21.06.2022 से लगातार )
- राजस्थान उच्च न्यायालय के सर्वाधिक कार्यकाल वाले मुख्य न्यायाधीश - **कैलाशनाथ वांचू**
- राजस्थान उच्च न्यायालय के कार्यकाल न्यूनतम कार्यकाल वाले मुख्य न्यायाधीश - **सुनिल अम्बवानी**
- राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रथम कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश - **जे . एम . पांचाल**

**राजस्थान के मुख्य न्यायधीश**

| क्र. | मुख्य न्यायधीश | कार्यकाल |
|---|---|---|
| 1. | न्यायमूर्ति कमलकांतवर्मा | 29.08.49 - 24.01.50 |
| 2. | न्यायमूर्ति कैलाशवांचू | 02.01.51 - 10.08.58 |
| 3. | न्यायमूर्ति सरजूप्रसाद | 28.02.59 - 10.10.61 |
| 4. | न्यायमूर्ति जे. एस. रानावत | 11.10.61 - 31.05.63 |
| 5. | न्यायमूर्ति डी. एस. दवे | 01.06.63 - 17.12.68 |
| 6. | न्यायमूर्ति डी. एम. भंडारी | 18.12.68 - 15.12.69 |
| 7. | न्यायमूर्ति जे. नाराया | 16.12.69 - 13.02.73 |
| 8. | न्यायमूर्ति बी. पी. बेरी | 14.02.73 - 16.02.75 |
| 9. | न्यायमूर्ति पी. एन. सिंघल | 17.02.75 - 05.11.75 |
| 10. | न्यायमूर्ति वी. पी. त्यागी | 06.11.75 - 27.12.77 |

| | | |
|---|---|---|
| 11. | न्यायमूर्ति सी. होनियाह | 27.04.78 - 22.09.78 |
| 12. | न्यायमूर्ति सी. एम. लोढ़ा | 12.03.79 - 09.07.80 |
| 13. | न्यायमूर्ति के. डी. शर्मा | 07.01.81 - 22.10.83 |
| 14. | न्यायमूर्ति पी. के. बनर्जी | 23.10.83 - 30.09.85 |
| 15. | न्यायमूर्ति डी. पी. गुप्ता | 12.04.86 - 31.07.86 |
| 16. | न्यायमूर्ति जे. एस. वर्मा | 01.09.86 - 22.05.89 |
| 17. | न्यायमूर्ति के. सी. अग्रवाल | 15.04.90 - 07.04.94 |
| 18. | न्यायमूर्ति जी. सी. मित्तल | 12.04.94 - 03.03.95 |
| 19. | न्यायमूर्ति ए. पी. रवानी | 04.04.95 - 10.09.96 |
| 20. | न्यायमूर्ति एम. जी. मुखर्जी | 19.09.96 - 24.12.97 |
| 21. | न्यायमूर्ति शिवराज वी पाटिल | 22.01.99 - 14.03.2000 |
| 22. | न्यायमूर्ति ए. आर. लक्ष्मान | 29.05.2000 - 25.11.2001 |
| 23. | न्यायमूर्ति अरुणकुमार | 02.12.01 - 02.10.02 |
| 24. | न्यायमूर्ति अनिलदेव सिंह | 24.12.02 - 22.10.04 |
| 25. | न्यायमूर्ति एस. एन. झा | 12.10.05 - 15.06.07 |
| 26. | न्यायमूर्ति जे. एम. पंचाल | 16.09.07 - 11.11.07 |
| 27. | न्यायमूर्ति नाराया रॉय | 05.01.08 - 31.01.09 |
| 28. | न्यायमूर्ति दीपक वर्मा | 06.03.09 - 10.05.09 |
| 29. | न्यायमूर्ति जगदीश भल्ला | 10.08.09 - 31.10.10 |
| 30. | न्यायमूर्ति अरुण मिश्रा | 26.11.10 - 13.12.12 |
| 31. | न्यायमूर्ति अमिताव रॉय | 02.01.13 - 05.08.14 |
| 32. | न्यायमूर्ति सुनील अंबवानी | 24.03.15 - 21.08.15 |
| 33. | न्यायमूर्ति सतीश कुमार मित्तल | 05.03.16 - 14.04.16 |
| 34. | न्यायमूर्ति नवीन सिन्हा | 14.05.16 - 17.02.17 |
| 35. | न्यायमूर्ति प्रदीप नन्द्रा जोग | 02.4.2017- 06.04.2019 |
| 36. | न्यायमूर्ति श्रीपति रवीन्द्र भट्ट | 05.05.2019- 22.09. 2019 |

| | | |
|---|---|---|
| 37. | न्यायमूर्ति इन्द्रजीत महान्ती | 06.10.2019-12.10.2021 |
| 38. | न्यायमूर्ति अकिल खुरैशी | 12.10.2021-06.03.2022 |
| 39. | न्यायमूर्ति एस.एस. सिंदे | 21.06.2022 से लगातार |

# करंट अफेयर्स
# अप्रैल – 2022

***आजादी का अमृत महोत्सव के आयोजन में देश में 'पहले स्थान' पर पहुंचा राजस्थान***

:-

*देश में मनाया जा रहे आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर राज्यों में अलग-अलग कार्यक्रम चल रहे हैं। इसमें राजस्थान पूरे देश में पहले नंबर पर आ गया है। इसकी घोषणा, दिल्ली में भारत सरकार के होम मिनिस्टर अमित शाह ने होटल अशोक में आयोजित हुए देश के सभी राज्यों के 'अमृत समागम' प्रोग्राम में की।*

*भारत सरकार के कला एवं संस्कृति सचिव गोविन्द मोहन ने इस मौके पर अपने प्रजेन्टेशन में सभी को बताया कि राजस्थान ने अब तक 1582 प्रोग्राम अपलोड किए। जिस के साथ राजस्थान आर्ट और कल्चर में देश में प्रथम स्थान आ गया है।*

*पंकज ओझा ने बताया कि राजस्थान में 12 मार्च 2021 को दांडी मार्च की वर्षगांठ पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की तरफ से आजादी का अमृत महोत्सव की शुरुआत की गई थी। इसके बाद से विभाग की तरफ से प्रोग्रामों को डॉ. बी.डी. कल्ला और गायत्री राठौड़ के नेतृत्व में पोर्टल पर अपलोड किया जाता रहा है।*

***राज्य में निःशुल्क आईपीडी और ओपीडी उपचार योजना का नामकरण क्या किया गया** है?*

*निःशुल्क आईपीडी और ओपीडी उपचार योजना का नामकरण 'मुख्यमंत्री निशुल्क निरोगी योजना को राजस्थान योजना किया गया है। राजस्थान के सभी राजकीय अस्पतालों में निःशुल्क ओपीडी और आईपीडी सुविधाएँ एक अप्रैल से शुरू होगी । शुरुआत में एक माह की अवधि में व्यवस्था का ड्राई रन किया जाएगा जिसमें क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं को चिह्नित कर समाधान किया जायेगा।*

***हाल ही में देश में महात्मा गाँधी नरेगा योजना के तहत साल 2021-22 के दौरान ग्रामीण इलाकों में 100 दिन का रोजगार उपलब्ध कराने में बाड़मेर जिले ने कौनसा स्थान हासिल किया?***

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

**नोट** – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

**संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083**

## प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 (cut off- 64) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 30 नवम्बर | 66 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 01 दिसम्बर | 65 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 13 सितम्बर | 113 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट) | 79 (150 में से) |

| | | |
|---|---|---|
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 95 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 56 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

## & Many More Exams

**दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –**

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

**अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।**

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

| | |
|---|---|
| ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE | Website- https://bit.ly/high-court-ldc |
| PHONE NUMBER | +918233195718<br>+918504091672<br>9694804063<br>01414045784, |
| TELEGRAM CHANNEL | https://t.me/infusion_notes |
| FACEBOOK PAGE | https://www.facebook.com/infusion.notes |
| WHATSAPP करें | https://wa.link/2vgzg6 |

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

# ***“राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक)”***

***भाग - 1 हिंदी + अंग्रेजी***

***भाग - 2 राजस्थान भूगोल + इतिहास + संस्कृति + करंट अफेयर्स***

*इन नोट्स में “**राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक**” **भर्ती परीक्षा**” का कम्पलीट सिलेबस (पाठ्यक्रम) शामिल किया गया है, जो लगभग **645** पेज में और **दो भागों में** समाप्त किया गया है। इनको छात्रों को पढ़ने में सिर्फ डेढ़ से दो माह का समय लगेगा।*

## ***नोट्स की विशेषताएं -***

***इन नोट्स में क्या क्या शामिल है -***

1) *“**राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक**” का कम्पलीट सिलेबस (पाठ्यक्रम) शामिल किया गया है जो **दो भागों में** तैयार किया गया है। सिलेबस के अलावा उसी से जुडी हुई ऐसी जानकारी जो परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है*
2) *पिछले वर्षों में आये हुए प्रश्नों का विश्लेषण करके जो टॉपिक अधिक महत्त्वपूर्ण लगे हैं उन पर अधिक ध्यान दिया गया है*

3) सभी नोट्स HANDWRITTEN हैं जो नवीनतम रूप से तैयार किये गये है , साफ - साफ लेखन कार्य किया गया हैं
4) हमने इन नोट्स में TRICKS डाली हैं , जिससे फैक्ट्स को आसानी से याद किया जा सके
5) सिर्फ उतनी ही जानकारी को शामिल किया गया हैं , जो परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, अनावश्यक जानकारी को हटा दिया गया है
6) रिवीजन के लिए अंत में शोर्ट में वनलाइनर रिवीजन तथ्य भी दिए गये है

**ये नोट्स निम्नलिखित लोगों के द्वारा तैयार किये गये हैं –**

1) राजस्थान की प्रमुख, प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों की BEST FACULTIES द्वारा तैयार किये गये हैं , जो अपने अपने विषयों में निपुण हैं तथा जिन्हें ""**राजस्थान हाईकोर्ट LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं कनिष्ठ सहायक**" का कोर्स पढ़ाने का काफी अनुभव हैं
2) कुछ टॉपर्स से हमारा टाई अप है जो फ़िलहाल नौकरी कर रहे है लेकिन आप लोगों को आगे बढ़ाने के लिए वो हमनें अपने इनपुट्स देते हैं और हमने उनको इन नोट्स में शामिल लिया हैं
3) इसके अलावा INFUSION NOTES की अपनी एक अलग टीम है जिसमे सभी अपने अपने विषयों के एक्सपर्ट्स हैं , वो लोग इनको रिव्यु करके अंतिम रूप से तैयार करते है

**ये नोट्स आपकी सफलता में कैसे मदद करेंगे –**

1. नोट्स को एक्सपर्ट टीम ने तैयार किया है , जो कोचिंग संस्थानों पर पढ़ाते हैं , इसलिए नोट्स की भाषा इतनी सरल है की कोई भी तथ्य एक बार पढने से समझ में आ जाएगा/ नोट्स को खुद से ही आसानी से समझा जा सकता है

इसलिए कोचिंग करने की कोई आवश्यकता नही है , इससे हजारों रूपये की कोचिंग फीस बचेगी /

2. सारा मटेरियल सिलेबस और पिछले वर्षों में आये हुए प्रश्नों के आधार पर तैयार किया गया हैं तो अनावश्यक डाटा को पढने से बचेंगे साथ ही कम से कम समय में पूरा पाठ्यक्रम समाप्त हो जाएगा ,
3. इसके आलावा हमारे एक्सपर्ट्स आपको समय - समय पर बताते रहेंगे की तैयारी कैसे - कैसे करनी है
4. इन नोट्स को कुछ इस तरह से भी तैयार किया गया है , की यदि किसी कारणवश छात्र का एग्जाम नही निकलता है तो उसमे जो जानकारी दी गयी वो किसी अन्य परीक्षा में भी काम आ सकती है , अर्थात् छात्र इनको पढ़कर किसी अन्य एग्जाम में भी APPEAR हो सकता है /
5. इन नोट्स को इस तरह से तैयर किया गया है कि इनको सभी तरह के छात्र आसानी से पढ़ सकते है , जैसे कमजोर छात्र , मीडियम छात्र , एक्सपर्ट्स छात्र /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO